★ स्मरणमङ्गलस्तोत्रं ★

॥ श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितम् ॥

आचार्य्य श्रीलश्रीमधुसूदनगोस्वामिचरण तथा श्रीदामोदरदासजी
महोदय विरचित छन्दबद्ध ब्रजभाषानुवादेन समलंकृतं
पद्मपुराण के पातालखण्ड वृन्दाबनमाहात्म्य
चौदहवाँ अध्याय व सनत्कुमारसंहिता
के छत्तीसवाँ पटल से
परिरञ्जित

प्रथमावृत्ति १०००
संवत २००६ माघ शु०त्रयोदशी
श्रीनित्यानन्दप्रभुजयन्ती
न्यौछावर ॥=)

प्रकाशक :—
कृष्णदास बाबाजी,
कुसुमसरोवर,(गोवर्द्धन)

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

—[समर्पण पत्रम्]—

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य
सकल देश प्रसिद्ध कीर्त्तिराशेः, प्रेम मात्र सर्व्वस्व
कृतस्य, निरन्तर सात्विक भावावल्या
विभूषितस्य, दी न ता सा ग र स्य,
मधुर स्वरालापैः सर्व्वदा गौर
कीर्त्तनकर्त्तुः, श्रीरामदासेति
नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीय
आराध्यदेवस्य, श्रीगुरु
देवस्य, बाबाजीमहा-
राजस्य प्रीत्यर्थं
समर्पितेदं ग्रन्थरत्नं ।

प्रस्तावना

भज-निताइ गौर राधे श्याम।
जप - हरे कृष्ण हरे राम॥

आज गुरु गौरांग गणों की पुनीत कृपा से श्रीमद्रूप-गोस्वामि महोदय के द्वारा विरचित "स्मरणमङ्गल" स्तोत्र हिंदी व ब्रजभाषा में अनुबाद के साथ छन्द बद्ध प्रकाशित होकर रसिक जनों के समक्ष उपस्थित हैं। निःसन्देह श्रीगोस्वामि चरण ने पद्मपुराणान्तर्गत पातालखण्ड बृन्दाबनमाहात्म्य के चौदहवें अध्याय को प्रमाण रूप से आधार मानकर एकादश श्लोकात्मक इस स्तोत्र की रचना की। क्योंकि श्रीमन्महाप्रभु की विशेष आज्ञा थी कि जो भी कुछ लिखें उसे प्राचीन शास्त्रोक्त प्रमाणों से परिपुष्ट करें। गोस्वामियों ने ठीक ऐसा ही किया। बे सब जो भी कुछ लिख गये हैं वह सब प्राचीन शास्त्रों के आधार से रचा गया है। इसीलिये ही हमने इस स्तोत्र के परिशिष्ट में पद्मपुराणीय पातालखण्ड स्थित बृन्दाबनमाहात्म्य का चौदहवाँ अध्याय भी ज्यों का त्यों अनुबाद के साथ दे दिया है। रसिकगण उसे इस स्मरणमंगल के साथ मिला कर पाठ कर लेवें। गौड़ीय वैष्णवगण व अष्टकाल स्मरण करने वाले रसिक प्रेमीजन, श्रीचैतन्यचरितामृत रचयिता श्रीकविराज कृष्णदास गोस्वामि के द्वारा विरचित "श्रीगोविन्दलीलामृत" ग्रन्थ के आधार से ही श्रीराधागोविन्द की दैनन्दिनी अष्टकाल लीला का स्मरण करते हैं। यह ग्रन्थ संस्कृतभाषा में अति विस्तृत रूप से लिखा गया है। इसमें तेईसवाँ अध्याय तथा २५०० श्लोक हैं। निःसन्देह साहित्य भण्डार में यह ग्रन्थ सर्वोपरि है। श्रीमद्-रूपगोस्वामि जी के एकादश श्लोकात्मक "स्मरणमंगलस्तोत्र" को मूल सूत्ररूप से आगे रखकर उसके भाष्य रूप में इस विशाल ग्रन्थ की रचना की गई है। इसके बंगाक्षर में अनुवाद

के साथ कई संस्करण छप चुके हैं। और भी अष्टकालीय लीलात्मक कई ग्रन्थ गौड़ीयग्रन्थगौरव में मौजूद हैं। आनन्दवृन्दावनचम्पूकार श्रीकविकर्णपुर महोदय के द्वारा विरचित "कृष्णाह्निककौमुदी" नामक ग्रंथ भी साहित्यभंडार में अतुलनीय रूप से विराजमान है। यह ग्रंथ भी बंगानुवाद के साथ वंगाक्षर में छप चुका है। श्रीलविश्वनाथ चक्रवर्त्ती महाशय ने भी "कृष्णभावनामृत" नामक अति सुन्दर सुविस्तृत अद्वितीय ग्रंथ की रचना की। यह ग्रंथ तो रस का भण्डार है तथा पद-पद में रस टपकता है। यह ग्रंथ भी देवनागरी अक्षर में व बंगाक्षर में अनुवाद के साथ कई संस्करणों में प्रकाशित हो चुका है। "गोविन्दलीलामृत" का भी श्रीयदुनन्दनदास जी के द्वारा विरचित बंगभाषा में विस्तृत पयार छन्द मौजूद है। यह भी वंगाक्षर में प्रकाशित हो चुका है। स्मरणमंगल स्तोत्र के भी बंग पयार में कई ग्रन्थ हैं। परन्तु वह सब संस्कृत व बंगभाषा में होने का कारण हिन्दी भाषा भाषी रसिक जनता के लिये दुरूह हैं। इस असुविधा को दूर करने के लिये प्राचीन अर्वाचीन महानुभावों ने भी हिन्दीभाषा में छन्दवद्ध कितने ही ग्रन्थ लिखे हैं, किन्तु यह सब अप्रकाशित रहने के कारण एतद्देशी प्रेमी रसिकों के लिये अप्राप्त हैं। मेरे पास ब्रजभाषा में स्मरणमंगल स्तोत्र व गोविन्दलीलामृत ग्रंथके आधार पर कई ग्रन्थ मौजूद हैं। षड्माधुरीकार माधुरीजीके द्वारा गौतमीयतन्त्र व गोविंदलीलामृत के आधारपर विरचित एक विस्तृत अति सुन्दर अष्टयाम भी मैंने उपलब्धि किया है। यह ब्रजभाषा में अतिसरस सर्वोच्च महान् ग्रन्थ है। किसी समय इसे भी प्रकाशित करने की चेष्टा करूँगा। संप्रति विद्वान् धुरन्धर, गौड़ीय आचार्य्य, सार्वभौम, गोस्वामि मधुसूदन जी के द्वारा विरचित और उन्हीं के आत्मज श्रीकृष्णचैतन्य गोस्वामी जी (छोटेलाला)

के द्वारा स्मरणमंगल स्तोत्र का अति सुन्दर एक अनुवाद मुझे प्राप्त हुआ है।

उसे प्रकाशित करने के लिये मेरी तीव्र इच्छा हुई। उन्हीं गोस्वामिचरण के आश्रित, गौरनिष्ठ, भिण्ड निवासी, मध्यभारत के भूतपूर्व्व न्यायमन्त्री, श्रीजगमोहनलाल जी श्रीवास्तव की आर्थिक सहायता से यह दुरूह कार्य्य सम्पन्न हुआ है। दूसरा श्रीदामोदरदास जी कृत स्मरणमंगल स्तोत्र का अनुवाद जो कि गोविन्दलीलामृत ग्रन्थ के आधार पर आठ अध्याय में लिखा गया है वह भी मेरा परम हितैषी, गौड़ीय आचार्य्य गोस्वामि श्रीपुरुषोत्तमशास्त्री जी (राजाजी) से प्राप्त हुआ। दामोदर-दास जी का परिचय विशेष उपलब्ध नहीं है। प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तक से यह अनुमान किया जाता है कि लगभग अढ़ाई सौ तीन सौ वर्ष पहिले आप श्रीगदाधर चैतन्य परिवार में से कोई महानुभाव हुए। प्रमाण पुष्ट के लिये पद्मपुराणीय पातालखण्ड बृन्दाबनमाहात्म्य का चौदहवाँ अध्याय इसमें संचित किया गया है। सनत्कुमारसंहिता में भी ठीक इसी प्रकार अष्टकाल का वर्णन है। पद्मपुराण का यह चौदहवाँ अध्याय ज्यों का त्यों उक्त संहिता में दुहराया गया है। प्रेमी पाठक पद्मपुराण के उपरोक्त अध्याय व सनत्कुमार के श्लोकों का मिलाकर इस अष्टकालीय "स्मरणमंगल" के आधार पर श्राराधागोविन्द की दैनन्दिनी लीला का चिन्तवन करें यह मेरी प्रार्थना है। परिशेषमें बृन्दाबन निवासी, शास्त्र निष्णात, गोस्वामि श्रीदामोदरलालजी, कोसी निवासी सेठ चेतरामजी, नबद्वीप हरि-बोल कुटीर निवासी श्रीहरिदासजी, श्रीजगमोहनलाल श्रीवास्तव जी प्रभृति महानुभावों का मैं धन्यवाद देता हूँ कि उन सबकी सौहार्दता से इस दुरूह कार्य्य का सम्पादन करने में मैं समर्थ हो रहा हूँ।

वैष्णवदासानुदास

कृष्णदास।

गौडीयग्रन्थगौरवः—

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१—गदाधरभट्टजी की वाणी

२—सूरदासमदनमोहनजी की वाणी

३—माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता)

४—वल्लभरसिकजी की वाणी

५—गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत)

६—गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजीकृत)

७—हरिलीला (ब्रह्मगोपालजीकृता)

८—श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजीकृत)

९—वैष्णवबन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दावनदासजीकृता)

१०—विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दाबनदासजीकृता)

११—प्रेमभक्तिचन्द्रिका (बृन्दावनदासजीकृता)

१२—प्रियादासजी की ग्रन्थावली

१३—गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजीकृता)

१४—राधारमणरससागर (मनोहरजीकृत)

१५—श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजीकृता)

सानुवाद संस्कृतभाषा में—

१—अर्च्चाविधिः (संगृहित)

२—प्रेमसम्पुटः (श्रीविश्वनाथचक्रवर्तीजीकृत)

३—भक्तिरसतरङ्गिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता)

४—गोवर्द्धनशतकं (विष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्यकृतं)

५—चैतन्यचन्द्रामृत और सङ्गीतमाधव (श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीजीकृत)

६—नित्यक्रियापद्धतिः (संगृहितः)

७—ब्रजभक्तिविलासं (श्रीनारायणभट्टजीकृतं)

८—निकुञ्जरहस्यस्तवः (श्रीमद्रूपगोस्वामिकृतः)

९—महाप्रभुग्रन्थावली (श्रीमन्महाप्रभुमुखपद्मविनिर्गता)

१०—स्मरणमङ्गलं (श्रीमद्रूपगोस्वामिकृतं)

॥ श्री श्रीराधारमणो जयति ॥

श्री श्रीचैतन्यचन्द्राय नमः

अथ स्मरणमंगलं लिख्यते ।

वंदौं गौरचन्द्र पद पङ्कज । जिहि वांछत नित कमला भव अज॥
राधारमण चरण रज आस । जिहि परसे पूरन मन आस ॥
श्रीगुरु चरण रेणु सिर लाऊँ । पिय प्यारी सेवा रस पाऊँ ॥
करत बंदना रूप सनातन । जुग रघुनाथ जीव मन भावन ॥
श्रीगोपालभट्ट जग पावन । बन्दो भव अज्ञान नसावन ॥
जिन करुणा बृन्दाबन पायौ । राधारमण मोहि अपनायौ ॥
करन बंदना वैष्नव गन की । जाते कटत मलिनता मन की ॥
बन्दों ब्रजमंडल तीरथ वर । नंदग्राम बरसानौं गिरवर ॥
बन्दौं जुगल कुंड सुखरास । जहां दुहुन कौ नित्य विलास ॥
बन्दौं वृंदाबन कर प्रनती । जीवन मरन यही मम गती ॥
नौमि भगवती पूरनमासी । योगमाया सब गुण की रासी ॥
पिय प्यारी की लीला सारी । ता घटना को जानन हारी ॥
ब्रज पूजित कृष्ना तट रहै । निस दिन पिय प्यारी सुख चहै ॥
तासु शिष्य वीरा और बृन्दा । श्यामा श्याम देत आनन्दा ॥
बृन्दाबन बृन्दा कू दीनौ । वीरा सब ब्रज आलय कीनौ ॥
सिद्धि मंत्र वृन्दा कू दीयौ । तासु दास्य बनदेविन लीयौ ॥
बृन्दा दिव्य शक्ति यह पाई । दूती ह्वै दुहु देत मिलाई ॥
सो सो बृन्दा पूरण करै । प्यारी पिय जा जो मन धरै ॥
मणिमय भूमि कल्पतरु कुंज । तह विहरत दोंऊ रसपुंज ॥
रत्न थामरे मंडप क्यारी । अति अनूप सुन्दर फुलवारी ॥
छह रितु मूर्तिमंत नित सोहत । पंछी मधुर गान मन मोहत ॥
यमुना कमल खिले सुखखान । कंचन तट रतनन सोपान ॥
निरतत मोर भृंग झनकारत । शुक सारी रस कथा उचारत ॥

चिदानंदमय परते परै। बीस कोस बन सब मन हरै॥
वृंदादेवी करहि सु सेवन। याही ते कहिये वृन्दाबन॥
बृन्दा चरण करूं आराधन। मिलै प्रेम भक्ति कौ साधन॥
वृंदा कृपा लहै बृन्दाबन। सेवा प्रेम वास सह सखियन॥
पूरणमासी करुणा कीजै। पद छाया दै यह वर दीजै॥
ब्रज मधि सिद्ध देह मैं लहूँ। सखी होइ सखियन संग रहूं॥
दिव्य वसन भूषन कर भूषित। नव अनुराग करूं सेवा नित॥
उज्वल गोप किशोरी प्रेम। लक्षवान जौ निर्मल हेम॥
मुनि जन हू जो वाँछा करैं। वेद शास्त्र सब साची भरैं॥
अष्ट सखी ललितादिक ध्याऊं। सकल मंजरीगन सिर नाऊँ॥
जिन प्रसाद सों प्रेमां मिलै। कली हृदय पंकज की खिलै॥
राधारमण कृपा तब करै। राधाचरण रेणु सिर धरैं॥
ब्रजतिय प्रेमानन्द मनोहर। ब्रह्मा शिव शेषादि अगोचर॥
हलधर मन ही मन नित धावैं। उद्धव नारद पार न पावैं॥
प्रेम भक्ति पावै तब कोय। जब ब्रजतिय अनुगा मन होय॥
निज स्वरूप सेवा उर धावै। अष्टकाल लीला मन लावै॥
दई कृपा कर गुरु जो देह। ताही कौ राखै अति नेह॥
रूप भावना मय निज धावै। सिद्ध देह साधन बल पावै॥
यही तत्व निश्चय जिय धरौ। निस दिन मानस सेवा करौ॥
अष्टकाल लीला मन भाई। श्रीमत रूप गुशाई गाई॥
मंगल मय सो ग्यारह श्लोक। सुमिरत हरत भक्त हिय शोक॥
सुमरन मंगल ताते कहिये। सुमिरत ही मन मंगल लहिये॥
निज प्रिय भक्त हेत रस भीनी। भाषा मधसूदन ने कीनी॥

श्लोक (१)

श्रीराधाप्राणबन्धोश्चरणकमलयोः केशशेषादयगम्या
या साध्या प्रेम सेवा ब्रजचरितपरैर्गाढ़लोल्यैकलभ्या।

सा स्यात् प्राप्या यया तां प्रथयितुमधुना मानसीमस्य सेवां
भाव्यां रागाध्वपान्थै र्व्रजमनुचरितं नैत्यिकं तस्य नौमि ॥

भाषा-श्रीराधिका जी के प्राणबंधु श्रीकृष्ण के चरणारविंद की प्रेम सेवा ब्रह्मा शिव शेशादिकन कूं भी अगम्य है। क्यों कि वे सब अपने अपने अधिकार में नियुक्त हैं जो अपनों अधिकार छोडके ब्रज भक्तन कौ आनुगत्य लैं और रागमार्ग सें सिद्ध देह पामैं तब प्रेम सेवा अर्थात् साक्षात् सेवा की प्राप्ति होय। उन सैं उन कौ अधिकार छूटै नहीं है यासे प्रेम सेवा मिल नहीं सकै है। यह प्रेम सेवा केवल उनें ही मिलै है जो ब्रजभक्तन के अनुगत होंय हैं। ब्रज में दास्य, सख्य, वात्सल्य, मधुर ये चार भाव है। जब कोई साधक इन में सें काऊ भाव कूं लैकैं अत्यंत लोभ सें मानसी सेवा करै हैं तब श्रीगुरुदेव के दीने सिद्धदेह सैं प्रेम सेवा पावै हैं। यह मानसी सेवा रागमार्ग सैं भजन करने वालेन के भावना करने की है। भक्तन की भावना की सिद्धि के लिये श्री कृष्ण जी जो ब्रज में नित्यलीला करैं हैं वा नित्यलीला कूं प्रणाम करैं हैं ॥ १ ॥ अब एक श्लोक से अष्टयाम की नित्यलीला संक्षेप से वर्णन करै हैं:—

कुञ्जाद्गोष्ठं निशान्ते प्रविशति कुरुते दोहनान्नाशनाद्यां
प्रातः सायं च लीलां विहरति सखिभिः सङ्गवे चारयन्गाः।
मध्यान्हे चाथ नक्तं विलसति विपिने राधयाद्धाऽपरान्हे
गोष्ठं याति प्रदोषे रमयति सुहृयो यः स कृष्णोऽवतान्नः ॥२॥

भाषा—जो श्रीकृष्ण निशान्तकाल में अर्थात् रात्रि के अन्त में श्री वृन्दाबन की आनन्दकुंज से ब्रज में आवें हैं और प्रातःकाल में गोदोहन-स्नान-भोजनादिलीला करैं हैं पूर्वान्हकाल में गोचारण और सखान के संग में क्रीडा करै हैं मध्यान्हकाल में श्रीराधाकुण्ड में श्री प्रिया जी के संग बिहार करैं हैं अपरान्ह काल में सखान के सहित गौनकूं बगदाय कैं ब्रज में आवें हैं प्रदोष काल में सुहृदन

कूं सुख दैहैं रात्रि में श्रीराधिका जी के संग श्रीवृंदावन में विलास करै हैं बे श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करै ॥ २ ॥

एक श्लोक सें संक्षेप से सब अष्टकाल की लीला वर्णन करिकें अब विस्तार से वर्णन करेंगे। एक एक श्लोक में एक एक काल की लीला वर्णन करिकें आठ काल की अर्थात् रात्रि की लीला दो श्लोक में वर्णन करेंगे। प्रथम एक श्लोक से निशान्तकाल की लीला कहैं हैं—

राज्यन्ते त्रस्तवृन्देरितबहुविरवैर्बोधितौ कीरसारी
पद्यैर्हृद्यैरवद्यैरतिसुखशयनादुत्थितौ तौ सखीभिः ।
दृष्टौ दृष्टौ तदात्वोदितरतिललितौ कक्खटीगीः सशंकौ
राधाकृष्णौ सतृष्णावपि निज निज धाम्नाप्नतल्पौ स्मरामि ॥३॥

शेष रैन श्रीवृंदा जागी। सखियन संग महा अनुरागी॥
राधा कृष्ण रसालस भरे। देखे नाना रंगन ढरे॥
प्रात काल की संका भई। पंछी गन कूं आज्ञा दई॥
आज्ञा पाय सुपुलकित भये। भ्रमरन धुनि सुनि आनंद छये॥
सुक सारी रस कथा सुनावै। पंडित गन जिमि सुख उपजामें॥
कोकिल पंचम गानहि गामें। पुनि कपोत फुत्कार सुनामें॥
आनंदित ह्वै नाचत मोर। सुन जागे दोउ नवल किशोर॥
सखियन संग तब बृन्दा आई। बहुविधि रस की कथा सुनाई॥
बहुरि ककखटी बोलत बानी। जटिला आवत अति दुःखदानी॥
नंद भवन कोलाहल भारी। जागौ वेग न करौ अयारी॥
यह सुन सब मन शंका छाये। अदल बदल झट पट पहराये॥
दुहू विरह सो अति दुःख छाये। करसों कर गह चलत जु भये॥
पट भूषन सामिग्री जेती। सब सखियन कर लीनी तेती॥
किन हू टूटी माला लई। किन हू अतरदानी छवि छई॥
किन हू कंचन झारी लीनी। किनहूँ पीकदानी कर कीनी॥

कोइन स्वर्ण पींजरा लीनों। किन हू पान दान रस भीनों॥
या विध सखिन हाथ सब कीयौ। रंगमंजरी चामर लियौ॥
कुंजभवन बाहर दोउ आये। विरह विकल नैनन जल छाये॥
बार बार दोऊ आलिंगन कर। जात भये अपने अपने घर॥
सचकित नैंन गये निज धाम। दुहुन जाय कियौ विश्राम॥
भरि हुलास तब प्यारी पायन। रंग मंजरी सेवत चायन॥
सहचरी हू सोई सुख पाय। प्रात समय पोहोचो इत आय॥

दोहा—श्रीपितु तत्वा राम पद, कमलन कौ कर ध्यान।
मधुसूदन वर्णन कियौ, प्रथम काल आख्यान॥

यह निशान्त काल की लीला छै घड़ी रात्रि रहे से प्रातःकाल तक की है। अब आगे के श्लोक में प्रातःकाल की लीला वर्णन करै हैं--

राधां स्नातविभूषितां व्रजपयाहूतां सखीभिः प्रगे
तद्गेहे विहितान्नपाकरचनां कृष्णावशेषाशनाम्।
कृष्णं बुद्धमवाप्तधेनुसदनं निर्ब्यूढगोदोहनं
सुस्नातं कृतभोजनं सहचरै स्ताऽवाथ तऽचाश्रये॥ ४॥

प्रात क्रिया कर पूरनमासी। नंदालय आई सुखरासी॥
जसुमति तिन पद लागत भई। पूरनमासी आसिस दई॥
कृष्ण दरस उत्कठा छई। कृष्ण शयन मंदिर कौ गई॥
खोल कपाट जसोमत रानी। बोली पूरनमां सौ वानी॥
देखौ पहरौ वल नीलांवर। खुरसट लगी सकल अंगन पर॥
ग्वालन संग लरत बन मांही। पीताम्बर की हू सुधि नांही॥
स्नेह जसोमत गदगद वानी। कुच पय श्रवत बहत दृग पानी॥
अंध दंड जिमि इक सुत अहो। बन बन फिरत करूं कहा कहौ॥
मानत कह्यौ न कीजै कहा। दूत कंस के डोलत यहाँ॥
भयौ प्रात जागौ रंग भरे। ग्वाल बाल सब अंगना खरे॥

सुन उठ पूरनमा कूं नये। मात प्रनम बाहर कूं गये॥
दाम सुदाम सुवल मधुमंगल। श्रीदामा कोकिल अरु उज्वल॥
स्तोक - कृष्ण बल आदिक जेते। सब मिलि खिरकन चले सुचेते॥
यहाँ जावबट में जो प्यारी। जागी सो विधि सुनिये सारी॥
राधा माता कीरत नामा। तासु धाय मुखरा अभिरामा॥
नृप बृषभानु सास सम पूढ़ी। राधा की नानी अति बूढ़ी॥
सो अभिमन्यु गेह में आवत। देख नातिनी अति सुख पावत॥
ताहि देख जटिला सिर नायौ। आदर करि कछु वचन सुनायौ॥
बारह बरस वधू के हाथ। रवि पुजाइयै सब विधि साथ॥
पूरणमा सूं मैं पूजौ जब। यही वचन बोलत हैं सो तब॥
रवि पूजन धन गोधन जेते। तुम्हरे पूरण ह्वै हैं तेते॥
अरु जसुमति की आज्ञा करिहौ। निज सुत धन आयुष विस्तरिहौ॥
पुनि जटिला मुख ऐसें कही। नातिन कूं समझायो यही॥
तुम पूजा विधि नीकी जानौ। अंग हीन पूजन मत ठानौ॥
यह कह दोऊ सैन गृह गई। खोल कपाट जगावत भई॥
वधू अंग पीरौ पट देख। होय सशंक वक्र पुन पेख॥
कही विशाखा सौ यह बात। क्यौं पट पीत वधू के गात॥
मो उपहास करत ही सबै। सो मैं आखिन देखौ अबै॥
यहै अग्नि मेरे घर जागी। यह कह थरहर कंपन लागी॥
जटिला वच सुन श्रवन अलीगन। भई काष्ठ सम सबहि अचेतन॥
तबहि विशाखा आगै छई। दासी चटपट बदलत भई॥
पुनि जटिला सौं बोली बानी। तुम्हरि दृष्टि छीन भई जानी॥
कहाँ पीतपट राधा गात। तुम विचार बिन बोलत बात॥
तब लखि नीलाम्बर लज गई। चुप ह्वै घर सैं बाहर गई॥
चतुर सखी सब अधिक हंसाई। श्रीराधा तब बाहर आई॥
सब सखियन सेवा मन लायौ। धोयौ मुख उबटनो लगायौ॥

कर रस वतियन स्नान कराये। पटभूषन वहु विधि पहराये॥
कुंदलता जी कौ नंदरानी। जटिला ढिग पठई सुख दानी॥
दुर्वासा राधा वर दीयौ। अमृत अन्न तुम हस्तन कियौ॥
तिह कर परिवेषित जो खाय। तासु क्षुधा आपु हि बढ़ जाय॥
मो सुत क्षुधा मंद अति लही। तब कर कृपा पूर्णिमा कही॥
जटिला पायन लागी सुनावहु। सखिन सहित राधा लै आवहु॥
सुन जसुमत वानी सुख लही। आप पाय पर सो सब कही॥
जटिला कहत सुनौं मम बात। याही तें मैं जिय अकुलात॥
चंचल जसुमति कौ सुत भारी। मेरी बहू सती सुकमारी॥
कुंदलता बोली हँस वानी। जटिला जू यह मैं सब जानी॥
निज संग रखि हौं तब सुतजाया। कृष्णहि लखन न दैहौं छाया॥
तब जटिला ने आज्ञा दई। कुंदलता राधा ढिग गई॥
स्वस्थ शरीर नहीं है मेरौ। और हू घर कौ काम घनेरौ॥
जटिला कहत बहू बलजाऊं। सपथ आपनी तोहि मनाऊं॥
ब्रजरानी आज्ञा नहि टरियै। धन जन पत आयुष विस्तरियै॥
मन मुसिक्याय चली श्रीराधा। पूरन भई सकल मन साधा॥
आय जसोमत पायन परीं। दै आसीस जसुमति उर धरी॥
गोदी लै पुन चुम्बन कीनौं। दई आज्ञा आनन्द भीनौं॥
सखियन संग पाक गृह जावहु। रोहिनि संग पाक मन लावहु॥
फेनी लड्डुआ खीर सुहाई। भात सिखरनी अति सुखदाई॥
मोहन भोगन हारी नीकौ। करौ सुधारि भांमती नीकौ॥
वहु पानक भाजी तरकारी। बरा पकोरी अति रुचिकारी॥
अरु बहुविधि व्यंजन अति स्वाद। कीजै प्यारी भर आल्हाद॥
आज्ञा सुन राधा रंग छाई। पाक गेह सखियन संग आई॥
कृष्ण हेत सब सामा कीनी। कृष्ण दरस उत्कंठा भीनी॥
तब दासन श्रीकृष्ण न्हवाये। पट भूषन बहुविधि पहराये॥

न्हाय श्याम भोजन गृह आये। बल अरु सखा संग सुखदाये॥
श्री जसुमत पकवान सु जेते। सब थारन भर दीने तेते॥
और तीन सौ साठ सुव्यंजन। राधा आन दिये मन रंजन॥
बड़े जतन हरि भाव छिपायौ। करत प्रशंसा भोजन पायौ॥
मधुमंगल कौ हास महान। कियौ आचमन खाये पान॥
रतन सेज पै पौंढे जाय। सेवा करत दास मन लाय॥
तब ब्रजरानी अति हठ लाई। राधा सखियन संग जिमाई॥
सुत विवाह अभिलास सुहाई। पटभूषन बहु वस्तु बनाई॥
सो भूषण पट अति छवि छाये। राधारूप निरख पहराये॥
कछुक सकल सखियन पहराये। दै सिंदूर ताम्बूल खवाये॥

दो०—श्रीपितु तत्वाराम के चरणन कौ करि ध्यान।
मधुसूदन वर्णन कियौ द्वितीय काल आख्यान॥

बारह घड़ी दिन चढ़े ताई पूर्वान्ह काल है ता समय की लीला वर्णन करै हैं—

पूर्वान्हे धेनुमित्रै र्विपिनमनुसृतं गोष्ठलोकानुजातं
कृष्णं राधाभिलोलं तदभिसृतिकृते प्राप्त तत्कुण्डतीरं।
राधाञ्चालोक्य कृष्णं कृतगृहगमनामार्घ्ययार्काच्चनायै
दृष्टां कृष्णप्रवृत्त्यै प्रहितनिजसखीवर्त्मनेत्रां स्मरामि॥ ५॥

शृंग वेनु बाजन लागे तब। ब्रजजन मिल देखन आये सब॥
त्रिभुवन मोहन वेष बनायौ। मोर पंख गुंजन छवि छायौ॥
तन द्युति कर मनि भूषन राजै। कटि किंकिनि पद नूपुर बाजैं॥
पीत वसन तन चंदन छायौ। सकल सखन हू बेष बनायौ॥
जसुमति मन अति आकुल भयौ। सुत मुख चूम दिठौना दयौ॥
पुन बलदेवहि हाथ गहायौ। शृंग वेणु चप संखन बजायौ॥
रामकृष्ण कीनौ बन यान। विकल भये सुनि ब्रजजन प्रान॥
होय अचेत रहे सब के सब। बोध परस्पर कर बगदे सब॥

लखि अचेत वृषभान दुलारी। गुप चुप आलिन तुरत सम्हारी॥
गेह आय द्विज संत बुलाये। सुत मंगल हित दान कराये॥
कृष्ण सखन संग बनमें जाय। खेलत विबिध खेल हरसाय॥
नाचत गावत मन के चाय। बन शोभा देखत सुख पाय॥
गाय हरित तृण चर सुख पामैं। पी जमुना जल तृषा नशामें॥
ब्रजरानी बन छाक पठाई। जेंमें सखन संग दोऊ भाई॥
राखे सहचर ठौर ठौर करि। मधुमंगल सुवलहि बोले हरि॥
आऊँ बन शोभा लखि हाल। तुम गायन की करौ सम्हाल॥
यह कह मन अति आनंद छये। राधाकुंड निकट हरि गये॥
इन प्यारे दर्शन अभिलास। श्री राधा आई निज वास॥
जसुमति कुंदलता संग दई। कर गहाय यों बोलत भई॥
जटिला सौं यह बिनती कीजौ। मेरे सुत वहु आशिष दीजौं॥
मो पै जटिला कृपा महान। यासे मो सुत कौ कल्यान॥
कुंदलता राधा संग आई। जटिला कूं सब विनय सुनाई॥
सुन जटिला बहु दई आसीस। मोहन जीबहु कोटि बरीस॥
भूषन बसन बधू तन देखे। मन ही मन अति आनंद लखै॥
जसुमति की अति करी बड़ाई। गुनन जसोदा सब ब्रज भाईं॥
तब जटिला ललिता समुझाई। तुरत जाहु रवि मंदिर मांही॥
कुंदलते तुम हूँ संग जाओ। रवि पुजाय राधा सग लाओ॥
सौंपी बहू तिहारे हाथ। विधि सौं पुजवाबहु दिन नाथ॥
यह कहि गृह कामन सूंलागि। राधा सखिन संग सुख पागी॥
तुलसी पुन ललिता ढ़िग आई। ललिता कहे वचन समुझाई॥
तुम माला बीडी लै जाओ। विपिन जाय मोहन पहराओ॥
हरि सों मिलन कुंज संकेत। निहचै लावहु समुझ सुचेत॥
हम सब रबि मन्दिर कूं चली। बीन बीन बन कुसुमन कली॥
तुम संकेत कहौगी जहां। हम राधा लै ऐहैं तहां॥

ताहि पढाय सखिन सं ग राधा। पूजन भानु चली सुख साधा॥
चली सखिन सं ग मंथरगमनी। हरि अनुराग कथा रस रमनी॥
निरखि विपिन शोभा सुख दाई। तुलसी मिली मध्य थल आई॥
मदनकुंज संकेत सुनाई। गुंजामाल कृष्ण ते पाई॥
सो ललिता कर दै समुझाई। शैव्या की लीला सब गाई॥
सुन के सकल सखी मुसकानी। ललिता माल प्रिया उर आनी॥
परसत माल अधिक सुख भयौ। हरि अनुराग सौ गुनौ छायौ॥
फिर सूरज के मन्दिर आंई। करि प्रणाम वर लै सुख छाई॥
दासी गणसों बोली तब ही। तुम सामा लै ठैरौ अब ही॥
हम पूजन हित फूलन लावत। यह कहि चलौ मुदित मुसिक्यात॥
पहुंचो आय कुंड के तीर। आवत मिटी विरह की पीर॥
भाव भेट दे कृष्णहि मिली। संग अली सोहत रंग रली॥

दोहा—श्रीपितु तत्वाराम के चरण कमल कर ध्यान।
मधुसूदन वर्णन कियौ तृतीय काल आख्यान॥

बारह घडी सें अठारै घड़ी दिन चढ़े तक मध्यान्ह काल है। ता मध्यान्ह काल की लीला वर्णन करै हैं :—

मध्यान्हेऽन्योन्यसङ्गोदितविविधविकारादिभूषा प्रमुग्धौ
वाम्योत्कण्ठातिलोलौ स्मरमखललिताद्यालिनर्म्मप्रशातौ।
दोलारण्याम्बुवंशीहृतिरतिमधुपानार्कपूजादि लोलौ
राधाकृष्णौ सतृष्णौ परिजनघटया सेव्यमानौ स्मरामि॥६॥

दुहुन दरस दुहु आनंद छाये। मन हु रंक जन बहु धन पाये॥
फूल बीनवे छलसो लगन। किलकिंचित भावन में मगन॥
कुंदलता हरि दिये सिखाय। पंचदेव पूजौ मन लाय॥
तब हरि पूजा करि सुख पाय। रतन हिंडोला झूले आय॥
कुंड अष्टदिस कुंज सुहाई। सखिन नाम विख्यात सदाई॥
रक्त पीत सित स्यामल हरी। नील चित्र नाना रंग भरी॥

जब जा कुंज प्रवेशै आय। तब ता बरन सबहि ह्वै जाय॥
आली द्रुम वल्ली फल पात। कुंज सम वरन सवहि लख्यात॥
सब कुंजन मधि करि बहु केली। नाना विध रस रंगन मेली॥
वंशी हरन केलि पुनि भई। आये रतन चौक सुखमयी॥
तह मधुपान कियौ सुख पायौ। सखिन संग वहु रंग मचायौ॥
फेर सुरतक्रीडा कर सुख पायौ। सखियन समिल शृंगार वनायौ॥
बहुविधि सरस सुगंध मिठाई। फल मेवा वृंदा सब लाई॥
भोजन कर विहार वन कीनौ। अरु अवसेस सखी गण लीनौ॥
गान सरस सुकमारिन गायौ। पुन चौसर कौ खेल मचायौ॥
तब पछीगन टेर सुनाई। जटिला रविमंदिर ढिंग आई॥
सुनत सवै रविमंदिर गई। मन मन कछु भय मानत भई॥
जटिला कहयो वेर क्यौं भई। मैं बन डोलत ढूढत दई॥
बन पथ भूल फिरी अकुलाय। तुम पुण्यन अव पोहोंची आय॥
विप्र वुलाय वेग अब लीजै। दिनकर पूज गमन घर कीजै॥
कुंदलता बोली मृदुवानी। एक ब्रह्मचारी सुखदानी॥
नाम विससर्मा पंडितवर। गर्ग शिष्य मथुरा ताकौ घर॥
तुम्हरे पुन्य विपन में आयौ। मैं लावतही मधु वहकायौ॥
बोली जटिला अति हरिषाय। लावौ मधुमंगल सह ताय॥
कुंदलता सुन हरि ढिंग आई। हँस विनोद की बात सुनाई॥
तब मधुमंगल छवि छाये। कृष्ण ब्रह्मचारी वन आये॥
विप्र देख वृद्धा सिर नायौ। द्विज वर आशिष वचन सुनायौ॥
पूंछौ विप्र वधू कौ नाम। जटिला नाम कह्यौ सुख धाम॥
विप्र चकित ह्वै वोले वानी। अहो यही राधा कल्याणी॥
जिन पतिव्रत व्रज में विख्यात। सो नैंनन देखी साक्षात्॥
यह व्रज पतिव्रता अति भारी। है सब व्रजजन मंगल कारी॥
पूजन मित्र विहित करवाऊं। मंत्र वोल विधि सकल वताऊं॥

जटिला द्विज लखि अति सुख पायौ। सब निज मन कौ भेद सुनायौ॥
रवि पुजाय द्विज बाहर आये। सब कूं आशीर्वाद सुनाये॥
बोली जटिला बिनती साथ। देखौ विप्र बहू कौ हाथ॥
यह सुन विष्नु विष्नु द्विज कही। मैं नारी अंग परसत नहीं॥
जटिला कही दूरते देखौ। मोपै इतनी करुणा लेखौ॥
द्विजबर कही सती यह नार। हस्तचिन्ह लखि कहूँ विचार॥
बधू सकुच नहीं खोलत हात। जटिला कहत कौन यह बात॥
हाथ देखि फल दियो सुनाई। जटिला मन में अति हरखाई॥
बोली एक बात यह मानों। राधा कूं दासी निज जानों॥
प्रतिदिन रवि पूजा करवाबहु। मेरी बिनती सों नित आवहु॥
यह कहि विप्र बिदा कर दई। भेट द्रव्य मधु मंगल लई॥
गये कृष्न तब गोधन ओरी। गई सखिन संग निज गृह गोरी॥

दो०—श्री पितु तत्वाराम के चरण कमल कर ध्यान।
मधसूदन वर्णन कियौ तुर्य्यकाल आख्यान॥

छै घड़ी दिन रहै तक अपरान्ह काल है ता समय को लीला वर्णन करै हैं:—

श्रीराधां प्राप्तगेहां निजरमणकृते कल्पितानोपहारां
सुस्नातां रम्यवेशां प्रियमुखकमलालोकपूर्णप्रमोदाम।
श्रीकृष्णश्चापरान्हे व्रजमनुचलितं धेनुवृन्दैर्वयस्यैः
श्रीराधालोकतृप्तं पितृमुखमिलितं मातृमिष्टं स्मरामि॥ ७॥

तब श्री कृष्ण सखन में आय। वेनु बजाय बुलाई गाय॥
तृन मुख धरै गाय सब आई। वत्स वृषभ महिषी सब धाई॥
श्री बलराम कही मधुमंगल। कहा छिपावत बाचे अंचल॥
मधु बोले पूजा हम पाई। हँस हँस लूट सखन सब खाई॥
गाली दै मधुमंगल भागे। कृष्न सबन कौं बरजन लागे॥
भाषत मधू शाप दैहौं अब। प्याव हु नांय पेट भर पय सब॥

राम कहत द्विज कछू न मानै। उदर परायन धर्म न जानै॥
एसें कौतुक करत सखन संग। बजवत वेणु चले नाना रंग॥
सखिन संग राधा गृह आय। गुही कृष्न हित माल बनाय॥
सखियन कीने बहु उपहार। अतर अरगजा पान सम्हार॥
पुन राधा सुगंध जल न्हाई। सखिन सिंगारी अति छवि छाई॥
चढ़ी अटा हरि दर्शन चाव। कहत विसाखा सों हरि भाव॥
आय तबहि दीयौ हरि दर्शन। मोहन मदन प्रेमरस वरसन॥
शृंग वेणुरव सहाचरि गान। तुमुल शब्द सुन पडत न आन॥
नाना रंग संग चतुराई। ह्वै तृभंग गति वेनु बजाई॥
संग सखा हरि रस के सागर। भामन भाव भरे गुन आगर॥
मोहन सुख शोभा लखि भामनि। जानत नही दिवस अरु जामनि॥
लखि राधा हरि भावन छाये। नाय दुहु मुख भाव छिपाये॥
नैंन सैंन बहुरस चतुराई। निरखि सखीगन आनंद छाई॥
बहुर कृष्ण नंदीश्वर आये। लखि ब्रजजन सब आनंद छाये॥
घर घर कनक कलस भरि धरै। आम मुकुल दीया घृत भरे॥
धुन सुन जसुमति मन सुख पायै। कंचन थारन दीप बनाये॥
राम श्याम लखि उलहौ हीयौ। दोउन कौ मुख चुंबन कीयौ॥
कनक आरती सुभग उतारी। तृन तोरे न्यौछावर बारी॥
लाढ कियौ दोउन अति चाय। मनि चौकिन बैठारे लाय॥
सखा गनन सब आसन दीने। सबन लगे भृत्य रस भीने॥

दोहा—श्रीपितु तत्वाराम के, चरण कमल कर ध्यान।
मधुसूदन वर्णन कियौ काल पंचमाख्यान॥

सूर्य्यास्त ताईं छै घड़ी कौ सायंकाल है ताकी लीला वर्णन करैं हैं—

सायं राधां स्वसख्या निजरमणकृते प्रेषितानेकभोज्यं
सख्यानीतेशशेषाशनमुदितहृदं ताञ्च तञ्च व्रजेन्दुम्।

सुस्नातं रम्यवेशं गृहमनुजननीलालितं प्राप्तगोष्ठं
निर्व्यूढो स्वालिदोहं स्वगृहमनु पुनर्भुक्तवन्तं स्मरामि ॥ ८ ॥

कृष्ण दरस आनंदित राधा । अगन उठत अनंग की साधा ॥
उतर अटारीतें बड़ भागी । कही विशाखा सों सुख पागी ॥
अमृतकेलि मोदक उपहार । माला चन्दन पान सुधार ॥
पठ औ प्राणनाथ के हेत । आमें जान रजनि संकेत ॥
ललिता कहन लगी मुसकाय । तुलसी और धनिष्ठा जाय ॥
करि आवौ संकेत सु रंगना । सुनत वचन दोऊ चली उमंगन ॥
करि प्रणाम ब्रजरानी दीने । भोजन द्रव्य सकल रस भीने ॥
सुवल कान में कही सचेत । आनंद कुंज मिलन संकेत ॥
हरि अवशेष गुप्त लै, आई । दै ललिता सब बात सुनाई ॥
बैठी प्रिया सेज सखियन संग । पान खात बतरात भरी रंग ॥
यहाँ कृष्ण मुख लख ब्रजरानी । गद गद कहत बहत दृग पानी ॥
अहो सुवन तुम गये कौन बन । बिन मुख देखै होत विकल मन ॥
जसुमत नेह कह्यौ नहि जाय । जाहि देख पाहन पिगलाय ॥
पुन सुगंध जल कृष्न न्हवाये । सुंदर पट भूषण पहराये ॥
कर गहि ब्रजरानी घर लाई । लाड़ चाव कर मन सुख पाई ॥
गंगा जमुना आदिक धेन । आप दुहो नागर सुख देन ॥
ब्रजपति मंदिर दूध पठाये । जसुमति भोजन त्यार कराये ॥
सखन संग बतरावत श्याम । पहुंचे आय मात ढिग धाम ॥
ब्रजरानी भोजन करवाये । सखन सहित मन मति हरखाये ॥
हात धोय लीने मुख बीरा । सखन सहित कौतुक रस धीरा ॥
रतन पलंग पै आय विराजे । हास विविध मधुमंगल साजे ॥

दो०—श्रीपितु तोताराम के चरण कमल कर ध्यान ।
मधुसूदन वर्णन कियौ षष्ठ काल आख्यान ॥

संध्या सें छै घडी रात्रि गये तक प्रदोष काल है ता समय की

लीला वर्णन करैं हैं :—

राधां सालिगणान्तामसितसितनिशायोग्यवेशां प्रदोषे
दूत्या वृन्दोपदेशादभिसृतयमुनातीरकलागकुञ्जाम् ।
कृष्णं गोपैः सभायां विहितगुणिकलालोकंन स्निग्धमात्रा
यत्नादानीय संशायितमथ निभृतं प्राप्तकुञ्जं स्मरामि ॥ ६ ॥

तब श्रीकृष्न सखा संग लये। सह वलराम सभा में गये॥
सुत मुख निरख नंद सुख पाये। सकल सभा मधि आनंद छाये॥
रामकृष्न दोऊ सुख कंद। निज समीप वैठाये नन्द॥
जो जो गुणि जन नृप ढिंग आवत। याही समय सवन वुलवावत॥
गुणि जन गान नृत्य अनुरागे। मधुर यंत्र सव बाजन लागे॥
इन्द्र जाल कोउ विविध दिखाये। कोऊ विविध रूप धर आये॥
कोऊ पुराण इतिहास सुनावत। नाटक कर कोऊ रस बरसावत॥
कोऊ नकल कर सवन हँसायो। नृपति वसन धन सवन दिवायो॥
रानी सुत वोलन हित दास। सभा मध्य पठये सुखरास॥
दासन राकुल विनय सुनाये। आयुष पाय कुमर गृह लाये॥
रानी चौकिन सुत वैठाये। शपथन मिश्री दूध पिवाये॥
अचमन कर वींरी मुख दई। श्रवत कुचन पय आनंद मई॥
रतन अटारी सुत संग लाई। दासन कोमल सेज विछाई॥
श्याम धाम ता पर पौढाये। वल निज सैन दासन पहुचाये॥
पठये सखा सकल निज गेह। जसुमति कौं सव सौं सुत नेह॥
चलत सीख दासन कू दीनी। कोलाहल की नाहीं कीनी॥
सोवत श्याम सुखी मन जानी। गृह काजन लागी नंदरानी॥
अचक उठे खिरकी पथ आये। आनंद कुंज रसिक छवि छाये॥
वृंदादिक तहं सेज सम्हारी। नाना पुष्पन अति मनिहारी॥
रासस्थली मनोहर वनी। रतन जटित सुख शोभा घनी॥
तहां विराज रहे मनमोहन। लागे श्रीराधा मग जोहन॥

ललितादिक मन आनंद भारी। श्रीराधा सुन्दर शृंगारी॥
कृष्न शुक्ल रजनी अनुसार। लली सिंगारत अली विचार॥
केलि कमल दक्षिण कर धार। आमन चली प्रेम रस भार॥
देख रूप तिहु लोक लजौना। रागमंजरी दियो डिठौना॥
विविध मिठाई चन्दन माल। स्वर्ण पींजरा डवा रसाल॥
लीनों सबस सखियन अपने कर। किय अभिसार जहां श्रीगिरधर॥
तरु छाया मय पथ तम भई। अचक चली दुर रति छवि छाई॥
नंदीश्वर पूरव वृंदाबन। सोलह कोस प्रमान धरौ मन॥
वृंदाबन कि अचरज रीत। सकुचत बढ़त दंपती प्रीत॥
निज गृह तें राधा छबि छाई। छिन में श्रीवृन्दाबन आई॥
वृंदाबन की छवि कहत न आवै। निस दिन दंपति सुख उपजावै॥
पशु पंछी दंपति गुण गामें। तरु वल्ली फूल पुष्पन छामैं॥
तहां कुंज इक अति अभिराम। आनंद कुंज जुगल सुख धाम॥
तहां प्रविश वृषभानु दुलारी। पिया दरस पायौ सुख भारी॥
मिल बैठे दोऊ पिय प्यारी। छबि लखि भई सखी बलिहारी॥
प्रेमानंद छके पिय प्यारी। निरधन जिमि पायौ धन भारी॥

दो०—श्रीपितु तोताराम के, चरण कमल कर ध्यान।
मधुसूदन वर्णन कियौ, काल सप्तमाख्यान॥

अष्टम काल अठारह घड़ी कौ है अर्थात् पहर रात गये सें पहर रात रहे तक ता समय की लीला वर्णन करै हैं—

तावुत्कौ लब्धसंगौ बहु परिचरणैर्वृन्दयाराध्यमाणौ
प्रेष्ठालिभिर्लसन्तौ विपिनविहरणै र्गानरासादिलास्यैः।
नानालीलानितान्तौ प्रणयिसहचरीबृंदसंसेव्यमानौ
राधाकृष्णौ निशायां सुकुसुमशयने प्राप्तनिद्रौ स्मरामि॥१०॥

* तावुत्कौ लब्धसङ्गौ वहुपरिचरणै र्बृन्दयाराध्यमाणौ—
गानैर्नर्म्मप्रहेलीलपनसुनटनैरासलास्यादिरङ्गैः।

---

* पाठान्तर में यह दो श्लोक हैं।

प्रेष्ठालिभिर्लसन्तौ रतिरसमनसौ मृष्टमाध्वीकपानौ
क्रीड़ाचार्य्यौ निकुञ्जे विविध रतिरणौद्भत्यविस्तारिताङ्गौ ॥
ताम्बूलैर्गन्धमाल्यैर्व्यजनहिमपयः पादसम्वाहनाद्यै
प्रेम्णा संसेव्यमानौ प्रणयिसहचरीसञ्चयेनाप्तसातौ ।
वाचाकांतरणाभि र्निभृतरतिरसौ कुंजसुप्तालिसंघै
राधाकृष्णौ निशायां सुकुसुमशयने प्राप्ततल्पौ स्मरामि ॥

दुहुन दरस दोऊ अनुरागे । आर्लिगन चुम्बत रस पागे ॥
शोभित दोऊ करत रस केलि । जिमि तमाल तरु चंपक वेली ॥
जुगल सरस रस वेदी आये । वृन्दा सेवन में मन लाये ॥
करत विशाखा रस परिहास । ललिता रसवतियन उल्लास ॥
कोऊ छिन बन विहार रस लीयौ । सखियन सुमन विछोंना कीयौ ॥
श्री राधा दक्षिण कर धार । कुंज कुंज मधि कियौ बिहार ॥
फेर तपनतनया तट आये । नृत्य विविध कीये सुखपाये ॥
कबहुँक आप नचत गिरधारी । बेणु वजाय रिझावत प्यारी ॥
प्यारी नाँचत कबहु मगन मन । बाजे विविध बजावत अलिगन ॥
रीझ प्रिया आनंद रस भूल । बारत प्राण देत ताम्बूल ॥
मिल सब प्यारे के गुन गावत । सबहिंन आनन्द रस बरसावत ॥
कबहू सखी मंडली महिया । नाचत दौड दिये गलवहिया ॥
मिल सब प्यारे के गुन गावत । हावन भावन रस बरसावत ॥
रास श्रमित बैठे दोऊ जन । करत मुदित आलीगन सेवन ॥
कोऊ पान दै विजन दुरावै । कौऊ अतर माल पहिरावै ॥
कोऊ सुगंधनीर छिरकावत । कोऊ मृदुकर अंगन सहरावत ॥
विंजन फल पानक रस आये । पिय प्यारी भोजन सब पाये ॥
कर अचमन पुन बीरी खाई । सखियन शेष प्रसादी पाई ॥
कुंज कुटी में सेज सम्हारी । तहाँ आय बैठे पिय प्यारी ॥
ललितादिक सहचरि सब आंई । चहूँ ओर प्यारी बैठांई ॥

समय समुझ आपुस मुसकाई। कर कर मिस बाहर उठ आई॥
श्याम प्रिया अंकन भरि लीनी। लखत झरोकन अलि रस भीनी॥
प्रिय प्यारी क्रीड़ा रस मई। निरखत सब मन आनंद छई॥
क्रीड़ा कर सोये रस चायन। रस मंजरी दबावत पायन॥
गुण मंजरी लखत जुग शोभा। देख देख सहचरि मन लोभा॥
उत्सव मंजरी बीन बजावै। निद्रा पिय प्यारी जिमि आवै॥
राग मंजर लेत बलैया। विलसौ सदा सखिन सुख दैया॥
इन्दुमती सुमती बड़ भागी। करत बियार अधिक अनुरागी॥
पंछी भ्रमर मौन गहि लीनी। सैन पिया प्यारी अब कीनी॥
दोऊ अंग भये मिल एक। लखत गौर तनु सहित विवेक॥
वृंदा विपिन निकुंज मंझार। विलसति रति रन जुगल विहार॥
नित विलसत या विधि रससान। सहचरि बिन जानत नहीं आन॥
कोऊ लखन अधिकार न पामें। यह रस नेति नेति श्रुति गामें॥
अमृत सिंधु यह युगल बिहार। बेद न पावत जाकौ पार॥
अमित ब्रज विहरन रस गायौ। साधक जन हित दिग दरसायौ॥
अष्ट जाम सेवन मन लामैं। सिद्ध देह लहि ब्रजरस पामें॥

दोहा- श्रीपितु तोताराम के, चरण कमल कर ध्यान।
मधुसूदन वर्णन कियौ, अष्ट काल आख्यान॥
मधुसूदन भाषा करी, सुमरण मंगल ग्रन्थ।
सहज हि मिलि है प्रेमरस, भजन राग के पंथ॥

इति श्रीरूपगोस्वामिकृते स्मरणमंगले
मधुसूदनगोस्वामिकृतभाषा-
प्रबन्धः समाप्तः॥

श्रीगदाधर चैतन्यचंद्रौ जयतां

अथ सुमरणमंगल की भाषा लिख्यते।

श्री गुरु प्रथम सुवंदियै, मन में धरि विस्वास।
ज्ञान दीप हिय बारिकैं, अज्ञानहि करै नास ॥ १ ॥
नमो कृष्णचैतन्य बर, जगत हेत अवतार।
श्री नित्यानंद वंदियै, तीन भवन मनोहार ॥ २ ॥
श्री अद्वैत सुबंदियै, पतितन पावन जानि।
बंद जू राधा गदाधर, रसिकनि कें तन प्रान ॥ ३ ॥
श्री प्रभु भक्तनि वंदियै, त्रिभुवन कौं सुख रूप।
प्रेम भक्ति कों प्रगट करि, रच्छित कीनें भूप ॥ ४ ॥
सुमरन कौं सुमरन मंगल, मन में होत उत्साह।
कृपा बीज हिय रोपियै, जासों होय निवाह ॥ ५ ॥
यह आसा धरि चित्त में, कहत जथा मति मोर।
ब्रज की लीला को किहूँ, पायौ ओर न छोर ॥ ६ ॥
मनसों सेवन युगल कौं, महासुदुर्गम जानि।
मनसों सेवन करत पुनि, सिद्ध होय सब आंनि ॥ ७ ॥
जिनकें जुगल उपासना, सेवा सुगम सु तांहि।
सिव ब्रह्मा ढूँढ़त रहत, भेद हूँ पावत नाहिं ॥ ८ ॥
रागमार्ग में मानसी, सिद्ध बेग ही होय।
निसि दिन लीला जुगल की, रहति बिचारति सोय ॥९॥
निसि कें सेस निकुंज तें, गमन करे निज धाम।
दोहन भोजन प्रात में, पूर्व काल बन जाम ॥ १० ॥
मध्य दिबस क्रीड़ा बिपिन, सगन लाडिली संग।
अपर दिवस में जात यह, सखा संग बहुरंग ॥ ११ ॥

भोजन सायंकाल में, गोदोहन बहु भांति।
प्रथम रैंनि सुखदैंन हित, बैठत अपनी ग्यांति ॥ १२ ॥
श्री वृंदाबन रात्र में, करत सु रास विलास।
निसि दिन यौं सुमरन करत, पूरत मन की आस ॥१३॥
सबही काल महा मधुर, रैंनि सेस सुख भार।
मंदिर में बिलसत दोऊ, अंतर सहत न हार ॥ १४ ॥
प्रात रात रनि सों श्रमित, बृंदा दुहुनि निहारि।
आज्ञा दै शुक सारिकनि, करवाई गुंजार ॥ १५ ॥
भ्रमत भ्रमर गुंजत सबै, मधुर मोर कर सोर।
सुनि सुनि नवल किशोर प्रिय, लपटत करत निहोर ॥१६॥
बन गृह की सुक सारिकनि, कही बहुत समुझाय।
उठि बैठे दोऊ तबै, अंगहि अंग लगाय ॥ १७ ॥
प्रीति लहर ता समै की, कापै बरनी जाय।
दोऊ निरखें रूप कौं, आनँद उर न समाय ॥ १८ ॥
द्वारि झरोखनि ह्वै सखिन, लखि केली बहु भांति।
वृंदा आज्ञा पाई कै, चली तहाँ वतराति ॥ १९ ॥
देखि राधिका सखिन कों, बेगहिं उठी लजाइ।
पहर उतावल पिय वसन, बैठी सखिगन आइ ॥२०॥
परि सहचरि सुख सरित दुहु, नीको रूप निहारि।
अधरनि में छत रदनि कें, नखनि के कुचनि मंझारि ॥२१॥
जे जे केलि करीं हूती, मिलि पिय प्यारी रात।
ते ते सब सज्जा सखी, सखिन जनावत प्रात ॥ २२ ॥
पिय हूँ सैंन सखीन दै, कही प्रिया की बात।
कुटिल कटाछनि प्रिया पुनि, प्रिय तन तान न जात ॥२३॥
भूलि सबै यह काज वह, यह सुख केलि निहारु।
सारी वृंदा बचन सुनि, पढ़त लगी पद चारु ॥ २४ ॥

पीतांबर पहिरयौ प्रिया, नीलांवर हरि अंग।
मधुर वचन सुनि कीर के, चले सखिन के संग ॥ २५ ॥
पिय प्यारी कर गहि चले, अबलोकत मुखचंद।
टहल परायन सखीजन, तिन कै भयौ आनंद ॥ २६ ॥
किनहुं अतर सीसी लई, किन हूं ढूढ़ी माल।
किनहुं पीक दानी लई, किन हूँ डवा रसाल ॥ २७ ॥
किन हूं जल झारो लई, किन हूं सारी कीर।
अपनी अपनी सोंज लें, चली सखिन की भीर ॥ २८ ॥
पिय प्यारी सोभा निरखि, सखियनि पायौ चैन।
ललिता ताही समै में, बोलि अरुण प्रति बैन ॥ २९ ॥
अरे मूढ़ दंपति सखि हि, करत सदा बनवास।
यातें गरत सपाद तब, तउ नहिं तजत प्रकास ॥ ३० ॥
सखी बचन सुनि राधिका, लागी उत्तर देन।
जो नहि गरत वाकै चरण, तौ नहीं होति रेन ॥ ३१ ॥
प्यारी के प्यारे बचन, सुनि बोले नँदननँद।
सुनि सब भूलीं ग्रह गमन, परी प्रेम के फंद ॥ ३२ ॥
कहत चातुरी बचन पुनि, सुनि वृंदा के बैन।
बेगि जाहु ग्रह न तौ अरुण, जटिला वे दुख देन ॥ ३४ ॥
श्री गदाधर चैतन्य पद, सरन दामोदर दास।
सुमरन मंगल को कियौं, सूछम प्रथम प्रकास ॥ ३५ ॥

इति श्रीदामोदरदासकृत सुमरनमंगल
प्रथमप्रकास ॥

॥ द्वितीय प्रकास ॥

पूरणमासी पवित्र ह्वै, नंद भवन गइ धाइ।
देखि जसोंमति दूर तें, वेगि ही लइ बुलाइ ॥१॥
पुनि जसुमति पाइन परी, दे अशीस गह्यौ हाथ।
कृष्ण दरसन के हेत पुनि, लई जसुमति साथ ॥ २ ॥

खोली कपाट पलंग पै, बैठी हित सौं जाय।
नीलांबर ओढ़ें सुतहि, लगी जगावन माय ॥ ३ ॥
पूरणमासी सों कहत, हित सों व्याकुल चित्त।
नील वसन बलदेव कौ, लाल खौर कर नित्त ॥ ४ ॥
चपल सखिन के संग यह, फिरत सदा बन माँहि।
तिन कै नख छत तन भये, बरज्यौ मानत नाहिं ॥ ५ ॥
पांच सात सुत नाहिंनें, मेरे एकै पूत।
मानें नहिं मेरो वचन, फिरत कंस के दूत ॥ ६ ॥
आंगन आए सखा सब, उठ हो गोकुल चंद।
सुनि सुनि पुनि पौढ़त हरि, खुलत न दृग अरविंद ॥७॥
कोकिल अर्जुन सुबल पुनि, दाम सुदाम श्रिदाम।
स्तोककृष्ण मधुमंगल रु, भद्रसेन बलराम ॥ ८ ॥
मधुर वचन इनके सुनत, उठत भयें नंदलाल।
पूरणमासी कों नवत, भये सबै ब्रजबाल ॥ ९ ॥
पुनि श्रीहरि मुख धोय के, भये सखनि के संग।
निज निज खिरकनि गये सब, वरनत बनें न रंग ॥१०॥
कहत जाववट कौं अवै, राधा चरित बखान।
जाजन विधि पुनि न्हान विधि, सुनौ रसिक दै कान ॥११॥
राधा माता कीर्त्तिदा, मुखरा ताकी मात।
राधा दरसन हेत सौं, नित्त हि आवै प्रात ॥ १२ ॥
जटिला मा अभिमन्यु की, राधा जू की सास।
तिनें प्रणाम करि बात कछु, पूछत अति विसबास ॥१३॥
पूरनमासी बात यह कही मोहि समझाइ।
रवि पूजा बारह बरस, बहु कै कर करवाइ ॥ १४ ॥
पुनि कहि जो जसुदा कहै, सो करियौ सब काज।
तव सुत आयसु बढ़ेगी, होंय सबै सुख साज ॥ १५ ॥

ताते तुम धोऊत कों, कहो बात समझाइ ।
नीकें पूजा करौ कछु, खंडित होय न जाइ ॥ १६ ॥
जहाँ राधा सोवत हुती, गई तहाँ हरषाइ ।
ओढ़े देखी पीत पट, जटिला भीतर जाइ ॥ १७ ॥
जटिला होय ससंक तब, कहत कठोर सुबात ।
अरी विसाखा कृष्ण पट, कैसें बहू के गात ॥ १८ ॥
सब जन पहिलै कहत हैं, इन कै कुल विपरीत ।
सो मैंने कुन मानती, अबै भई परतीत ॥ १९ ॥
जटिला बानी बान सों, भयौ सबनि कें त्रास ।
रही चित्र सी सब सखी, गई विसाखा पास ॥ २० ॥
ओढ़े सोइ दीनौं सखी, नीलांवर पहराय ।
पुनि जटिला सों कहि, कहाँ पीतांवर दिखराय ॥ २१ ॥
रूप तेज रवि किरण मिलि, नील पीत रंग होइ ।
जटिला लज्जित होई कें, गई हसें सब कोइ ॥ २२ ॥
राधा निद्रा तजि चली, आंगन सखियन संग ।
स्नान ठोर बैठी प्रिया, अंगन निरखत रंग ॥ २३ ॥
ललिता उतारे भूषनन, विसाखा राखत जाय ।
तब सुगंधन लिनो दोऊ, नाइन सुता सु आय ॥ २४ ॥
करि फुलेंल मर्दन उवटन, चोटी गुही विचित्र ।
रसिक भ्रमर पद कमल में, कीनें जावक चित्र ॥ २५ ॥
रङ्गो मंजिष्ठा दुहुनि तब, धोय बसन दिये आय ।
स्नान करायौ सबनि मिल, दये वस्त्र पहराय ॥ २६ ॥
करयौ जाय शृंगार गृह, राधा कौं शृंगार ।
अंग अंग भूषन सजत, भगत भवन अधियार ॥२७॥
करि सिंगार दर्पन दियौ, अबलोकत निज रूप ।
कृष्ण मिलन की लालसा, यहै आय अनुरूप ॥ २८ ॥

कुंदलता कों जसुमति, कहि ऊक बात बुलाइ।
जटिला सौं कहि पग परनि, कहौ बात इक जाइ ॥२९॥
दुर्वासा वरतें सब, राधा हाथ मिठाय।
पुनि जोजन भोजन कर, तास आयु बढ़ि जाय ॥ ३० ॥
मो सुत कें सूछम छुधा, नीठ तनक सो खाय।
पूरनमासी कहि मोहि, राधा हाथ जिवाय ॥ ३१ ॥
जटिला की मो पर कृपा, कहो बात तुम जाय।
सखिन सहित ल्यावै राधिकाहि, जटिला कों समझाइ॥३२॥
कुंदलता जाय कही सब, जटिला संका पाय।
पूरनमासी बचन पुनि, सुधि कर दई पठाय ॥ ३३ ॥
जटिला आज्ञा पाइ कैं, राधा चली उमंग।
कृष्ण प्रेम सौं मगन पुनि,सब सखियनि लिये संग॥३४॥
मारग में प्रीतम दरस, करत चली नंद धाम।
जाइ जसोमति कैं पगनि, परी मिली अभिराम ॥ ३५ ॥
करी पुनि सब सखिन कौं, यथा योग सनमान।
पाक ग्रेह में ले गई, मिली रोहिनी आनि ॥ ३६ ॥
कही जसुमति चुंवन करी, राधे रोहिनी संग।
अन्न विंजन पीठी वरा, करिये होय उमंग ॥ ३७ ॥
ललिता करौ रसालिका, चित्रा सरवत घोर।
चंपकलता मठा करौ, विसाखा सांडव जोर ॥ ३८ ॥
रंगदेवी मंडा करौ, बासती मृदु फेन।
करौ जलेबी मंगला, पिनी लासिकानि ऐंन ॥ ३९ ॥
छेंना तुंगविद्या करौ, सिखरन इंदुलेखाय।
करौ मलाई आदि दै, ग्रेह सुदेवी जाय ॥ ४० ॥
करो चंद्रकांति कादंवरी, कौमुदी गूझा भाँति।
मठिरी मदनलसा पुनि, माधवी मोदक पाँति। ॥४१॥

रामचकरो ससि, मुखी जातें अति सुख होय।
सुमुखी करौ कचौरयनि, पुनि युवा मनिमती जोय ॥४२॥
लाडू गेंहू चून के, कांचनलता बनाय।
दूजें लाडू कीजियै, मनोरमा सुख पाय ॥४३॥
तिलक सरी करि माधुरी, रत्नमाला मोतिचूर।
विंध्या धान खील के, लाड़ू करि सुख पूरि ॥४४॥
रंभा दधि सातू करो, पक्के केरा मिलाय।
करो मनोज्ञा आंवरस, किर्लिवा करि ह्यौ जाय ॥४५॥
अहो अंबिका दूध तुम, करौ ओटाय बनाय।
अरू जौ कछु जानौं सोऊ, करौ दूध गृह जाय ॥४६॥
जाहु धनिष्ठा तुहू संग, रंगिली तुलसी लेहु।
जो जो ए चाहैं सो सब, भंडार ते देहु ॥४७॥
दासिन कों कहि जसुमती, करौ टहल ततकाल।
जो मांगें सो दीजियै, ढील करौ मति बाल ॥४८॥
रंभा आंवरे आंव पके, मिसरी रस सरसाय।
भारी रुचकारी वन्यौ, मुख्वा कह्यौ न जाय ॥४९॥
भरि भरि वासन कनक के इंदुमुखी तू ल्याइ।
ते सब भोजनन गृह में, धरौ बेगि तुम जाइ ॥५०॥
आंब विजोरै आंवरै, नीबू बेर जिमिकंद।
येलैये आचार सब, खात होत आनंद ॥५१॥
उचित वसन राधा पहर, किये सब पाक बनाय।
अपनी अपनी टहल पुनि, करी दासियनि जाय ॥५२॥
अपनी अपनी टहल सब, करत दास मन भाय।
ढील रसोई की कतिक, पूछी जसुमति जाय ॥५३॥
कहन लगी तब रोहिणी, सुनि अचिरज की बात।
सोइ रसोई आजु है, ये छवि वरनि न जात ॥५४॥

भाजि राइतौ साठ विधि, तरकारी बहु भाँति।
राधा गुन देखौ अहो, मौपै कहे न जांति ॥५५॥
खट्टी करी पचास विध, मिलमा करी पचास।
तिती करी पुन चरपरी, दैखै होत हुलास ॥५६॥
भुजिया केइ प्रकार सों, धरिवें कौं नहिं ठौर।
पाच प्रकार कीनें वरा, कोऊ न जानें और ॥५७॥
अमृतकेलि कपुंरकली, पीयुष ग्रंथी नाम।
सुधा विलास नग गोटिका, थूली खीर सुवाम ॥५८॥
अहो जसोमति में करी, ये मथना भरि दारि।
भात फुलकिया ढेर पुनि, कीनी सबैं सुधारि ॥५९॥
सुनि जसुमति कहि दास सों, कृष्ण हि ल्याबो बुलाय।
दासनि जायहू वाय कै, सब भूषण पहराय ॥६०॥
तब हरि भोजन ग्रह गये, सबैं सखन लै संग।
आसन पात्र जुदे जुदे, छवि की उवड़त रंग ॥६१॥
वायें सुवल बल दाहिनें, सम है मधु हुलसात।
अरू सब बैठें रीति सों, हरि मुख लखि बिकसात ॥६२॥
सरवतादि जसुमति दए, हरि जेंये स सनेह।
पुनि जसुमति कहि राधिका, ल्याई है सब देह ॥६३॥
सुनि सु अष्ट सात्विक भयै, श्री हरि के तन मांहिं।
तिरछें लखि राधावदन, हरि भोजन सुधि नाँहि ॥६४॥
जसुमति तब लागी कहन, हित सौं व्याकुल चित्त।
मिठी मिठाई अमृत रस, जेंवौं सब तुम मित्त ॥६५॥
यह सुनि मधुमंगल कहै, सबै खह्यौ यौ मौहि।
मौसो मिलि ह्वै है बली, श्रीहरि कहों में तोहि ॥६६॥
हसैं सबैं पुनि रोहिनी, खीर दई लै आनि।
क्रम सों सब व्यंजन दिये, लियें मांगि मन मानि ॥६७॥

जसुमति दई रसालिका, लई सबन सुख पाइ ।
मुख्ब और आचार पुनि, जैंये सब हुलसाइ ॥६८॥
लै कैं चुलू सबै सखा, गये सु निज निज धाम ।
सेंन गृह श्रीहरि गए, सँग मधुमंगल राम ॥६९॥
बैठे जाय पलंग पै, दीनी बीरी दास ।
राधा देखति सखिन संग, जाय झरोखनि पास ॥७०॥
तब जसुमति राधा सहित, सबनि जिवाई आनि
हर्ष परोसति रोहिणी, सब जेंइ मन मानि ॥७१॥
खाये पान सलैं चुलू जसुदा, हरषाहि पाइ ।
राधा सहित सबकौं वसन, भूषन दये पहराइ ॥७२॥
पुनि जागे श्रीकृष्ण जू, दासन किये सिंगार ।
बन के उचित सवेस कियैं, अँग अँग सोभा भार ॥६३॥
बलरामादिक सखा सब, कियै समान सुबेस ।
श्रीहरि तिनहिं सखनि संग, बन में कियौं प्रबेस ॥७४॥
श्री गदाधर चैतन्यपद, सरण दामोदरदास ।
सुमिरन मगल कौं कियौ, सूछम द्वितीय प्रकास ॥७५॥

इति श्रीदामोदरबासकृत सुमरन मंगल
द्वितीय प्रकास ॥

तृतीय प्रकास ।

नाचत गावत सखा सब, राम कृष्ण के संग ।
बंसुरि बजावै ताल में, हांसी करें बहु रंग ॥ १ ॥
गाइ भैंस चलि खिरकतें, सोभा वरनि न जात ।
बाल वृद्ध गोपी पुनि, चलें रंग बरषात ॥ २ ॥
नंद चले सँग गोप लै, जसुदा गोपिनमांह ।
आगें राधा सखिन संग, गई बहुत द्रुम छांहि ॥ ३ ॥
विरह विवस व्याकुल मना, थंभे न अंसवन धार ।
नंद जसुधा आतुर चलैं, सब ही भये पिछार ॥ ४ ॥

देखि कृष्ण आये बगद, जसुदा पहुँची धाइ।
सहस्रबार मुख चुंबन कर, असुवनि अंग भिजाइ॥५॥
अरे पूत मो ग्रेह में, बहुत दास बलबान।
तू एकै तेरे बिना, देखें छूटत प्रान॥ ६॥
बहुत कही मानें नहीं, तब बलराम बुलाइ।
पुनि जसुमति सब सखनि कौं, दियौ हाथ पकराय॥७॥
नंदादिक मिलि चुंबनि करि, गए सबै निज धाम।
हरि सब ब्रजबासीन कै, कहि पठयें निज काम॥ ८॥
बिरह विकल नव बुधनि कौ, दइ सेंनन समझाइ।
राधा विरहनि देखि करि, हरि दृग जल न समाय॥९॥
नेंननि विनय सु करि कही, तुम मम प्रान तुम देह।
कुंड आई हौ कृपा करि, अब जायौ निज ग्रेह॥१०॥
कृष्ण सखन संग बन गये, मधुर बजावत बैंनु।
गोवर्द्धन कें निकट में, हरषि चुगाई धेनु॥ ११॥
सखिन सहित राधा विरह कौं, बरनें जिय जाइ।
कुंदलता के संग सब, चली पूतरी प्राय॥ १२॥
जटिला कौं लखि कही पुनि, होहु सु सबै सचेत।
पुनि जटिला सौं कहीं सब, धन की प्राप्ति सहेत॥१३॥
तब जटिला कही हरषी, करि बेटी तू प्रान।
पूजा विधि कराय ज्यौं, सिद्ध काम होय आन॥ १४॥
जटिला राधा सखिन कों, बिधि सब दई बताइ।
कुंदलता हूँ सँग लै, राधा निज ग्रह जाइ॥ १५॥
बैठि पलंग पै चरण ध्वै, बीरी लई लगाइ।
दिये बन के वृंदा कुसुम, नित की माल बनाइ॥ १६॥
तुलसी लै वीराह स्रज, मिलन कुंज की बात।
कस्तूरी कौं संग लै, चलि हरि गुन बतरात॥ १७॥

सखनि सं ग बन में करत, नृत्य गान बहु भाँति ।
भेष अनेक करे तऊ, विरह होत नहिं सांत ॥ १८ ॥
राम कृष्ण पुनि सखनि सं ग, आये मानसी गंग ।
धेनु बुलाय स बेन सों, पियो नीर सब संग ॥ १६ ॥
कृष्ण पान करि सखनि सं ग, स्नान कियौ तिह नीर ।
पहरै सब भूषण बसन, छुधा सों जात सरीर ॥ २० ॥
आई धनिष्ठा छाक लै, हरि पाई सब संग ।
बैठि पुलिन सब ओर सुख, भयौ वरषत सुख रङ्ग॥२१॥
धनिष्ठानें पारस कियौ, जे ये हरषित चित्त ।
बीरी खाई चलू लै, कियौ विश्राम मित्त ॥ २२ ॥
कृष्ण कही अहो मित्र हों, माधुरी बन की कुंज ।
सं ग मधुमंगल सुबल लै, लखौ जाय सुख पुं ज॥ २३ ॥
सँग धनिष्ठा हू गये, कुसमोखर ब्रजचंद ।
बृंदा मिलि दये फल द्वै, देखि परै हित फंद ॥ २४ ॥
इन सब सों मिलि श्री हरी, कीनौ बहुत बिचार ।
बृंदा कही धीरज करो, ह्वै है सबै निर्द्धार ॥ २५ ॥
तब तुलसि आइ मंगल लें, देखि भयो अति सख्य ।
श्रग बीरा हित सों लये, गये भाजि सब दुःख ॥ २६ ॥
हरि पूछी राधा कहाँ, कही सु रोकी सास ।
भये विसुधि हरि बात सुनि, बृंदा कौं बिसवास ॥२७॥
इक पलक मोहि सहस जुग, ल्यावौ कहौ उपाय ।
तुलसी मुख वृंदा लख्यौ, दसा देखि ब्रजराय ॥ २८ ॥
तुलसी तब हरि सौं कही, यह कीनो परिहास ।
कहौ कुंज संकेत की, ल्याउँ वेगि तुम पास ॥ २६ ॥
गुंज माल दइ रीझि हरि, मदन सुखद सुख धाम ।
वृंदा दियौ बताय तब, आई सैव्या नाम ॥ ३० ॥

वाक चातुरी बहुत भइ, कहें ग्रंथ बढ़े एह।
वृंदा कुंड सुधारिवें, तुलसी गइ निज ग्रेह ॥३१॥
हरि सेव्या कौं टारि करि, आय कुंड के तीर।
बृंदा दिये दिखाइ कुंड, कुंज लता द्रुम नीर ॥ ३२ ॥
राधाकुंड और कृष्ण कुंड, दोऊ जुगल सरूप।
विविध भाँति राजत कमल, जल सुवास अनूप ॥३३॥
राधाकुंड के बीच है, अनंग मंजरी कुंज।
रतन खेंची जल रूप पुनि, बहुत कुंज सुख पुंज ॥३४॥
रतन खचि कंचन सिढ़ी, छतरी परम अनूप।
लता वृच्छ मोहत सबनि, थांवरे मंडल रूप ॥ ३५ ॥
चहुँ ओर माधुरी की, चारि कुंज छवि सार।
तिन में हेम अरविंद से, बंधे हिंडोरे चार ॥ ३६ ॥
दिसा आठ कुंज आठ इकु, इकमें चौसठि कुंज।
सबहि बानि विचित्र लखि, सुरपुरहू भये लुंज ॥ ३७ ॥
केरा फूल रु पूग के, कुंज कुंज में बाग।
आंव नारियर लतनि में, सुक सारो करें राग ॥ ३८ ॥
ललिता कुंज उत्तर दिसा, मदनस सुखदा नाम।
हेममयी नाना वरन, दुहुँनि कौ मोहन धाम ॥ ३९ ॥
विसाखा कुंज इशान दिश, नंदन सुखदा नाम।
पुष्पमयी विविध भाँती, पूरण कर सब काम ॥४०॥
चित्रा कुंज पूरव दिशा, मदनें सुखदा नाम।
चित्र बनाये धाम सब, को वरनें गुन ग्राम ॥ ४१ ॥
इंदु लेखा की कुंज है, अग्निकोन रंग सेत।
सुखप्रदा पुनि नाम है, दुहुँन कों सुख देत ॥४२॥
दछिन दिसि चंपकलता, कुंज सर्पीत सरूप।
कामकेलि सुखदा कहत, विहरत नागर भूप ॥ ४३ ॥

नै ऋतु दिसि में कुंज है, रंगदेवी की स्याम ।
सुखदा ताकी ख्यात है, सिद्ध करे सब काम ॥ ४४ ॥
तुंगविद्या की पछिम में, अरुण वरन है कुंज ।
आनंद मदना नाम है, बहुत कुंज सुख पुंज ॥ ४५ ॥
हरि कुंज वायव कोंन, सुदेवी जू की जानि ।
बसंत सुखदा नाम है, सोभा बहु गुन खान ॥ ४६ ॥
दुहुँ कुंड की महा छवि, कुंज तुल्य गुण रूप ।
इक इक में है चारि मग, मानौं सरिता भूप ॥ ४७ ॥
दरवाजें लगें भाँतिसि, भीत लगै मनौं नीर ।
देखि विपति छिन आवही, बगद जाइ तजि धीर ॥४८॥
राधाकुंड छवि देखि के, लाल भये बेहाल ।
तीर नीर द्रुम लतनि में, राधा रूप रसाल ॥ ४९ ॥
राधाकुंड राधा सु सम, बेद पुरान प्रमान ।
हरि राधा कौ प्रीय सौं, जो जन करे सनान ॥ ५० ॥
छवि श्रीराधाकुंड की वरनें, सो कवि कौन ।
जाहि देखि श्रीकृष्ण हू, ध्यान धरी कियौ मौंन ॥ ५१ ॥
बृंदा सों हरि कही तब, सफल होय यह धाम ।
प्यारी सों मिलि करी जबै, सिद्ध होय सब काम ॥ ५२ ॥
बृंदा जानि हरि हीय की, धनिष्ठा लई बुलाय ।
सखिन सहित लइ राधिका, कही बात समझाय ॥ ५३ ॥
निज गृह राधा सखिन संग, बहुत किये पकवान ।
समझावत है राधिकहिं, विसाखा व्याकुल जानि ॥५४॥
पुनि राधा तासों कहत, अपनें जिय की बात ।
इन्द्रिय वृत्ति हरि हरी, कछू न मोहि सुहात ॥ ५५ ॥
कस्तूरी तुलसी तभी, जाइ दई गुंजा माल ।
पुनि द्वै फूल दये, लये पहर सु हरषी बाल ॥ ५६ ॥

संकेत कुंज की बात पुनि, सुनि करत उतराल।
संध्या की पुनि बात सुनि, बाढ़त दुःख बिसाल ॥ ५७ ॥
समझावत सबही सखी, तिनसों कहत सुबात।
तुम जावो मोसौं कहा, जातें विज्ञ न जात ॥ ५८ ॥
सासु कुटिल पति दुष्ट, महानंद सुतनंद।
चंद्रावली बैरनि सदा, क्यों मिलिये ब्रजचंद ॥५९॥
आइ धनिष्ठा कही सब, चली दुरत तब बाल।
कृष्ण दसा पुनि सुनि चली, सखियनि संग उताल ॥६०॥
राधा जित देखत तितै, लखै पिय कौ रूप।
देखि चकित सब अलि कहें, यहै नेह अनुरूप ॥ ६१ ॥
वर मांगे मन के प्रिया, सूरज मंदिर जाय।
लै वर फूलनि कों चली, सखियनि तहाँ बैठाय ॥ ६२ ॥
भये महत्तरी राधिका, अंग सुगंध सुपाय।
वृंदा आइ कही सबै, गई जहाँ हरिराय ॥ ६३ ॥
पुनि सब मिलि न्हाये अहो, मानस पावन घाट।
कियौं सिंगार सु विरह दसा, बाढयौ ताप उचाट ॥६४॥
मदन सु सुखदा कुंज में, मिलै सखीयन जाय।
भावनि भेट चढ़ाय कें, सब तहाँ रहै समाय ॥ ६५ ॥
श्रीगदाधर चैतन्य पद, सरण दामोदरदास।
सुमरण मंगल कौं कियौ, सूछम तृतीय प्रकास ॥६६॥

इति श्रीदामोदरदासकृत सुमरनमंगल
तृतीयप्रकास ॥

चतुर्थ प्रकासः

मध्यानकाल आनंद की, मनदें सुनियै बात।
दरसन में विह्वल दोऊ, अंग अंग पुलकात ॥ १ ॥
मिस करि केसर फूल कौं, प्रिया सहाथ उठाय।
लाल देखि भुज मूल कौ, सुख नहिं हिये समाय ॥ २ ॥

जब हरि आये निकट तब, प्रिया लखि तिरछाय।
बहु सुख होत लखि प्रिय तन, किल किंचित जे भाय ॥३॥
तरुणाई गुरु कै दोऊ, सिष्य कौं करत विवाद।
काम सास्त्र में रीति यों, निति में गुरु सों वाद ॥४॥
लाल कहत जे बात सुनि, प्रिया रिसात सुनेंन।
बाहिर दुःख भीतर सु सुख, कामी कपटी बेंन ॥ ५ ॥
प्रिया चली मुसिकाय कै, मारग रोक्यों स्याम।
अब तुम कैसें जाहुगी, बन कौं धन लौ धाम ॥ ६ ॥
दौर स्याम आंचर प्रिया, गह्यों अंग यह मानि।
ग्रीव फेरि कटाछ करि, कियै ठूक तन प्रान ॥ ७ ॥
पट छुटाय गइ छूटसौं, कियें धाई हरि अंग।
कहि कहत तुम हमन चोर, तुम्हीं चोर तुम संग ॥८॥
पुनि बन धन तन धारि कै, कहो साधु लहि मोहि।
जिनके वस्त्र हरे हरी, ते जानती हैं तोहि ॥ ९ ॥
ब्रह्मचारि हम तुम कहत, यह कछु झूँठी नाहिं।
गई तरुणता तऊ तुम, किहुँ न बरे ब्रज माहिं ॥ १० ॥
जौ वटु हौ तौ सुंदरि तु, क्यों देखों सुख पाय।
वंसि कुटनी हाथ करी, नव ब्रज वधूनि बुलाय ॥११॥
तुम जौ कहौ मेरौ विपिन, कोनें दियौ अधिकार।
मेरी वृंदा सखी याहि, राखत सदा सुधारि ॥ १२ ॥
विधिना मोकों आप सों, दियौं रीझि बनराज।
सो मानत अपनौं यातें, गई तुमें तजि लाज ॥१३॥
कुंड मेरौ जानत सबै, मो सखियनि के धाम।
अपनौं मानत नाहिं तू, ह्वै निलज्ज घनस्याम ॥१४॥
प्यारी वचन महामधुर, सुनि पायौ पिय चैन।
चंचल कर सौ दौरि करि, गहै उरू जल नैन ॥१५॥

कुटिल दृगनि सौं कमल सौं, राधा दीनि मार।
पुनि अँग पुलकैं भाव सों, डुबे दोउ सुख धार ॥१६॥
कुंदलता द्विज हे कह्यौ, पूजौ पंच सु देव।
नवग्रह पूजौ विधिन सों, दस दिसिपाल सु सेव ॥१७॥
पार्वती श्रीराधिका, शंकर हैं श्रीस्याम।
सबै अंग अर्पण कियै, भये सिद्ध सब काम ॥१८॥
कुंदलता कों खिज प्रिया, छूगई चालबान।
तब राधा मुख कमल पर, भ्रमर आय करि गान ॥१९॥
महादुष्ट विडरे नहीं, तब भय सु प्रिया भाज।
गई लपटी तन पीय कै, सिद्ध भये सब काज ॥२०॥
प्यारी पिय की मिलन लखि, सखियन सुख न समात।
वृंदा देखि सुदूरतें, नांदी सौं कहि बात ॥२१॥
पिय प्यारी के मिलन में, सखियन क्यौं सुख होय।
कहियै मोकौं प्रीति सौं, मो मन संका खोय। २२॥
दरस लोभ देखें बिना, देखें मिलन सचाह।
मिलै खिजै अनखाइ करि. कहा रीति यह आइ ॥२३॥
तब नांदी कहि रीति यह, ब्रजबधुवनि कें मांहि।
हरि हित हेत करें सबै, अप हित एको नाहि ।.२४॥
राधा सक्ति आल्हादिनी, हरि की वहत पुरान।
पात फूल की तूल सब, सखी समाज हि जान ॥२५॥
राधा लता रु मिलन जल, सिंचन बढ़त सुजात।
सरस होंय सब सखी ये, ज्यों फल फूल रु पात ॥२६॥
स्वतें सिद्ध श्रीलाल कों, बिना सखिन सुख नांहि।
सखियनि कें आश्रय बिना, रसिक परै दुख मांहि ॥२७॥
ललिता सों राधा कही, तू मृदु भइ वाचाल।
खिजत बकत आई तबै, ललिता जूठिंग लाल ।.२८॥

ललिता सों कही श्री हरि, मेरौ दोष नहिं आहि।
मिलि आप सों मोहि यह, तू क्यों इतौ रिसाइ ॥२६॥
ललिता कहि रे ढीठ सुनि, राधा मिलि बौराति।
जैसौ द्रुम सौं लता हीं, तें कीनी बिपरीत ॥३०॥
खीजी संग सब सखिन के, ललिता भौंह चढ़ाय।
सिथिल भयें हरि तन जबै, प्रिया लखी तिरछाइ ॥ ३१ ॥
बंशी गिरी लई प्रिया, छिपी सखी गन जाय।
राधा ढूँढ़त मिस हरी, सबसौं मिलै सधाय ॥ ३२ ॥
खीज कै चंदमुखी कही, अहै ढीठ कुराय।
अपनी बंशी चूंबियै, परतिय कर न लगाय ॥ ३३ ॥
बंशी की भई सुधि तबै, पूछत ह्वै अति दीन।
कोउ कहै सख्या ने लई, कौउ कछु कहै नवीन ॥ ३४ ॥
कहां सुसंपति दीजियै, ह्याँ मैं लई छिपाइ।
आयें ललिता पास तब, तिह कहि खिज मुसिक्याइ ॥३५॥
बंशी छल करी ढीठ कै, जिन आवै मो पास।
दुष्ट गई मंगल भयौ, अब हम बसें निज वास ॥ ३६ ॥
चिंतामणि कौं ढेर हम, पग करि छिये न ताहि।
कौड़ी की नहिं बाँसुरी, बहुरी सकुटनी आहि ॥ ३७ ॥
अति कौतुक बंशी हरण, बरनें सों बढ़ी जाय।
सुछम तें बरनन कियौ, दुष न देहु कविराय ॥ ३८ ॥
लता कुंज राधा छिपी, हरि कहीं पाइ नाहिं।
कुंदलता दई सैन तब, पाई मंदिर मांहि ॥ ३९ ॥
सुख सज्जा में प्रिया प्रिय, केलि करी बहु रंग।
आय दोऊ सखियन बिच, बाढ़त प्रेम तरंग ॥ ४० ॥
राधा छवि बरनन करी, सब सखियनि पिय पास।
लगी दिखावन सबनि कों, बृंदाबिपिन विलास ॥ ४१ ॥

पवन पाय बोलि बाँसुरी, सुनि बोली सब बाम।
चोरी तौ वृंदा करै, लेय हमारौ नाम ॥ ४२ ॥
बृंदा कही सव्या लई, दई बानरी मोहि।
कृष्ण बजाबत बाँसुरी, बन सब पुलकित होहि ॥ ४३ ॥
तबै सबै आई विपिन, ऋतु जिन आदि बसंत।
जड़ जंगम धर्म न रह्यौ, होत चित्त हुलसंत ॥ ४४ ॥
गरवाही प्यारी पीया, सखी चहूँ दिसि जात।
सब ऋतु सबही बाग में, लता बृच्छ हुलसात ॥ ४५ ॥
फूलडोल होरी सरद, सिसर रु वर्षा काल।
ग्रीषम और बसंत पुनि, विहरत राधा लाल ॥ ४६ ॥
करत विवाद सुक सारिका, सुनि सबही हुलसात।
प्रश्नोत्तर पुनि सखिन के, सुनि इक कौतुक बात ॥ ४७ ॥
तबही आयौ भ्रमर इक, मुख कौ सौरभ पाय।
सखी बिडारत तऊ नहीं, प्रिया बदन तें जाय ॥४८॥
दुष्ट न माने तब प्रिया, पिय पर दुबकी जाय।
पुनि सखी कह्यौ गयौ मधुप, अली भली सुख पाय ।४९।
सुनि भई प्रेम विचित्रता, गयौ चंद्रावली पास।
समझि यहै ताड़न करत, धनिष्ठा कौं लै स्वास ।५०॥
मेरौ हिहै दुःख सब, जानि बूझि बन आइ।
देखो सठने विपिन में, लई विपच्छ बुलाइ ॥ ५१ ॥
मो आगें ऐसै करैं, पाछै कहा न कराइ।
मान्यौं नहिं ललिता कह्यौ, ताकौ यह फल पाय ॥५२॥
ललिता कर गहि लै चली, चलौ आपनें ग्रेह।
विरह बिवस अति दीन ह्वै, बोली सहित सनेह ॥५३॥
जद्यपि बहु दोषनि भर्यौ, पुनि मूरख अति मित्त।
कहा करों देख्यौ चहत, तऊ सरल यह चित्त ॥५४॥

ललिता कहि भोरी अरी, कहि मत ऐसी बात ।
धान समान सुरीति तिय, भीतर ही पकि जात ॥५५॥
कही राधिका लाल बिन, देखें मो जिय जाय ।
मान बडाई जाहु सब, ताहि मिलाबै ल्याय ॥५६॥
तब हरि ठाढ़े साधु हें, लखि अपनौं पुनि रूप ।
भानि ताहि चंद्रावली, कापित अंग अनूप ॥५७॥
कुंदलता ने कही तब, प्रीतम सों मिलि बेगि ।
भई ईरषा सो विमुख, कहो कहा उद्‌बेगि ॥५८॥
तब कही है ठगिनी तू, इक तिय लखत विशेषि ।
ढीठ ढिठाई कों अरी, आई सब तू देखि ॥५९॥
में बुलई नहिं हरि कही, कहत मोहि यह बात ।
राधा की हूँ सहचरी, ढीठ कहें नहिं जात ॥६०॥
लेहु बुलाइ अपनी सखि, करत हि हारे काज ।
ललिता कहिय कान में, सुनि राधह भइ लाज ॥६१॥
सखिन सहित दुहुवन कियौ, भरि प्यालै मधुपान ।
रति विपरीतादिक सबै, करि केलि मन मानि ॥६२॥
जल में केलि करी सबंनि, को बरनें सुख सार ।
भूषन बसन पहिरि किये, भोजन पंच प्रकार ॥६३॥
बीरी खाई हरष सों, पहुड़े मंदिर मांहि ।
हरि छबि बरणन सुक करत, सुनत सबै हरिषांहि ॥६४॥
पुनि चौपरि आदिक जेते, खेलें सबहि खेल ।
कियौ वरनन संछेप सों, ध्यान धरौ रस झेलि ॥६५॥
जटिला आइ सारी कही, सुनि संका भइ चित्त ।
राधा रवि मंदिर गई, हरि संग दोऊ मित्त ॥६६॥
जटिला पूछी तब कही, गइ हूती बन मांहि ।
बाग बिपिन ढूढ़े सबै, कौउ मिल्यौ द्विज नांहि ॥६७॥

बिससर्मा इक नाम द्विज, माथुर गर्ग कुल माँहि।
आवत हौ हमें नम्र लखि, मधु आँवनि दयौं नाहिं॥६८।
मधुतें तुमरे दोष सुनि, गयौ सु द्विज उलटाय।
जटिला कही मनाइकै, लायौ दुहुनि बुलाइ ॥६९॥
कृष्ण ही अरु मधूमंगलहि, कों दील्याइ बुलाइ।
स्याम ब्रह्मचारी ह्वै, दई असीस सु जाई ॥७०॥
पूजा कौं आरंभ कियौ, पूछि बधू कौ नाम।
जटिला कहि वृषभानु की, राधा सब गुण धाम ॥७१॥
पतिव्रता ब्रज ख्यात ह्वै, होहु सुनो ब्रज आय।
पूजा मित्र कराइहों, धर्म चरित्र सुनाय ॥७२॥
द्विजबानी सुनि सबनि कैं, प्रीति भई बिसवास।
रवि पुजाय करि द्वार पैं, आयसु दई असीस ॥७३॥
द्विज गुन लखि सबहिन कही, लखौ बहू कौ हाथ।
हरि हरि कह रिस सौं कही, कहौ न ऐसी गाथ ॥७४॥
पै मैं तुमरी प्रीति बस, लखौं दूरतें हाथ।
लच्छन लखि पुलकै सु तन, मुख निसरे नहिं गाथ॥७५॥
भाव संभारि कहन लगे, चिन्ह रमा सम जानि।
ग्रेह रहे मंगल सदा, होय दुख की हानि ॥७६॥
कहौ पुत्र कौ नाम अब, जटिला कहयौ हरषाय।
गिन अंगुरि कही विघन बहु, पर इह बधू सहाय॥७७॥
सुनि जटिला अति हरष सों, छाय बधू की दीन।
मधु कौ जौं दियौ सबै, बांधि गठरीया लीन ॥७८॥
देखि बिप्र मधु सों कही, परधन जिन छिय हाथ।
मधु ने कहीं तुमें कहा, दोष सबै मो माथ ॥७९॥
ह्वै प्रसन्न जटिला तब, कही सदा तुम आइ।
बिधि सौं रबि पूजाइयै, हित सों दोष नसाइ ॥८०॥

जटिला लै आसीस कौं, गई सबनि लै संग।
विरह बिबस हरि कै दृगनि, पानी परत अभंग ॥८१॥
प्रिया सखिन संग बिरह सौं, चितबत आई धाम।
मिलै जाय सब सखनि कौं, मोहन सुन्दर स्याम ॥८२॥
श्री गदाधर चैतन्यपद, सरन दामोदरदास।
सुमिरन मंगल के किये, सूछम चारि प्रकास ॥८३॥

इति श्री दामोदरदास कृत सुमरण मंगल
चतुर्थ प्रकास ॥

पंचम प्रकासः

देखि सखा सब कृष्ण कों, वंसुरी शृंग बजाय।
आय प्रलाप रु गाय करी, मिलि करि हसें हसाय ॥१॥
बलि पूछी मधु मंगलहि, काहिकि गठरी ऐह।
रवि परसाद कही तो, बांटि सबनि कों देह ॥२॥
मधु कहि तुम सैं लोभी रु, लूटा देहु न मैंन।
सुखनि लुटी खाये तबै. मधु जू गारी देन ॥३॥
मुदरी लीनी बले नें. मधु पुनि देत सराप।
सारे सबै तुम द्विज धनहि लें मानौ नहिं पाप ॥४॥
ऐसें हासी करत बहु, बाल देखि हुलसात।
खेल करे हित सों सखा, सबै भाजि दुख जात ॥५॥
सबै चुगाई धेनु सब, वंशी में लैं नाम।
घर कों चले सखा कहैं, चले स्याम बलराम ॥६॥
चंग शृंग बंसरी बजैं, करै खेल बहु रंग।
बाग विपिन देखत चलै, गोरज भूषित अंग ॥७॥
सुरगन गगन स्तुती करत, मधु बरजत करि हास।
मधु कहि असुरादिक जिते, विष्णु करत है नास ॥८॥
दौरयौ रिस करि लट्ठ लै, सबै हसे सुख पाय।
संग जिते तित ने सब, करत बनाइ बनाइ ॥९॥

श्रीराधा सखियनि सहित, अपनें गृह में जाय।
चरण प्रछाल पलंग पै, बैठी सखि गन आय ॥ १० ॥
संध्या पुनि निसि भोग हित, कीने सब पकमान।
बीरा स्रज कीनें सबैं, करत कृष्ण गुन गान ॥ ११ ॥
न्हाय राधिका नील पट, पहरयौ हित नंदलाल।
वेंनि गुही लेंदी चिबुक, दीनी परम रसाल ॥ १२ ॥
भाल तिलक सिंदूर को, चित्र विचित्र सुमाल।
हस्त चरण नासा सुभग, अंजन नेंन विसाल ॥ १३ ॥
मोती सोहत अंस पुनि, राजत किंकिनि डोर।
पुहप माला ताम्बूल मुख, जावक चरननि जोर ॥१४॥
ये सोरह सिंगार हैं, सुनि द्वादसलंकार।
ध्यान करतही देखियै विह्वल नंद कुमार ॥ १५ ॥
टेढ़ो बारी झूमका, सीस फूल नथ आहि।
मणि सीमंतक बंदनी, सौंसन बरनी जाहि ॥ १६ ॥
कंठ माल पुनि धुक धुकी, हास मनिन की माल।
अंगिया मोती माल पुनि, सोहै पदक रसाल ॥ १७ ॥
बाजूबंद चूरी बरा, कंकन सुंदरी जानि।
पहुँचि कटा रु रतन की, कांची फोंदा मानि ॥ १८ ॥
पाइजेब अरु घूंघरू, जे हरि नूपर जानि।
बिछिया गाइक ह्वै मनो, लेत मधुर ए तान ॥ १९ ॥
ग्रेह ग्रेह ते सखी सबै, आईं बेस बनाय।
लै राधा सब सखिन कौ, बैठी अटा सु जाय ॥ २० ॥
ऐसें देखें कृष्ण कौ, तैसें चंद चकोर।
यों हरि देखें प्रिया मुख, ज्यौं चातक घन और ॥ २१ ॥
जसुदा समै सुजानिकें, रोहिणि लई बुलाइ।
अतुला संग पाकहि करौं, कही दासनी जाइ ॥ २२ ॥

माली आये तबै सब, लै फल मूल रसाक।
विभाग दासी किये तब, दुहुनि कियें सब पाक ॥२३॥
जसुदा सब गोपीन लै, भइ ठाढ़ी सिंह पौरि।
नंद चलै संग गोप लै, सब ब्रज आयौ दौरि ॥२४॥
फुलन के सिंगार सब, गोरज भूषित अंग।
सब के बगदे प्रान लखि, दुहुनि सखनि के संग ॥२५॥
चंग बाँसुरी ताल में, गावत राग बनाय।
धेनु शब्द जनु मेघ धुनि, सुनि सु गोप सुख पाय ॥२६॥
नाचत गावत सजी सब, स्यामहि कछु न सुहाय।
प्यारी मुख पुनि देखि करि, हरि कौं विरह सिराय ॥२७॥
पिय प्यारी छबि मेघ जल, सब की ताप बुझाय।
नदी रूप ह्वै बढ़ी चलै, सखी समुद्र रहै जाय ॥२८॥
नैंन सेन सों विनय करि, गये लाल निज धाम।
सब कै आये प्राण ज्यों, लखि मुख श्री घनस्याम ॥२९॥
हित सौं गावत सब सुजन, जल धारै सब धाम।
सब खिरकनि में सबनि पुनि, लखैं स्याम बलराम ॥३०॥
और दौर सबही मिलैं, नंदनंदन सों प्रीति।
गोपी गोपनि सों मिलै, जासौं जैसी रीति ॥ ३१ ॥
सखा कहैं सब कृष्ण सों, चलौं मित्त घर जांहि।
कही नंद बहु प्रीति सों, तबै गये घर मांहि ॥ ३२ ॥
ब्रज बधुबनि अवलोकि करि, दियौ जु हरि सुख सार।
जसुमति मिलि सुत कौं बदन, चूम्यौ बेर हजार ॥३३॥
जैसें मिलैं सब स्याम सौं, तैसें ही बलराम।
जसुमति अति हरष सों, दुहुंनि लै गई धाम ॥ ३४॥
सखिन सहित श्री प्रिया कै, विरह विकल अति प्रान।
अपने अपने गृह गये, सब ब्रजवासी जान ॥ ३५ ॥

मणि चौकी पर जसोमति, करी आरती जाय।
आई देखि जु रोहिनी, मिलै सु दोऊ धाय ॥ ३६ ॥
गई रोहिनी ग्रेह में, पुनि जसुमति सुख पाय।
ब्रज द्विज सबै बुलाइ कैं, गोधन दये लुटाय ॥ ३७ ॥
श्रीगदाधर चैतन्य पद, सरन दामोदरदास।
सुमरन मंगल के किये, सूछम पंच प्रकास ॥ ३८ ॥

इति श्रीदामोदरदासकृत सुमरनमंगल
पंचमप्रकास ॥

षष्ठप्रकास।

पुनि जसुमति दुहुँ सुतनि कों, स्नान ग्रेह लै जाय।
दासन तैल मर्दन कियो, श्रम सब गयौ बिलाइ ॥ १ ॥
धनिष्ठा सों जसुमति कही, राधा ढिग तुम जाय।
बरा मिठाई आदि लै, ल्याबौ बिनय लजाय ॥ २ ॥
जाय धनिष्ठा हरष सों, कहीं बात समझाइ।
राधा तुलसी हाथ सब, दई वस्तु सुख पाइ ॥ ३ ॥
बृंदाबन में मालती, दियो सँकेत बताइ।
पुनि जसुमति जू कौ दियौ सबै धनिष्ठा आइ ॥ ४ ॥
देखि जसुधा हरष सौ, किय द्वै भाग बनाइ।
इक नारायण भोग हित, द्विज कर दियौ पठाय ॥ ५ ॥
बे सब न्हायौ न्हाय हरि, सबै सखन के संग।
सब सौ मिलि भोजन कियौ, पुनि हाँसी बहु रंग ॥ ६ ॥
सरवर ओर रसालिका, मेबा बहु परकार।
बरा मिठाई मुरब्बा, दिये लिये आचार ॥ ७ ॥
मधुमंगल हाँसी करत, जेंहैं सबै मनमानि।
सेन करी लै कै चुलू, रुचि सों खाये पान ॥ ८ ॥
चरण पलोटत दास सब, नेकु कियौ बिसराम।
आय सखा बोलैं तबै, खिरकनि में गये स्याम ॥ ९ ॥

कृष्णाबसेस धनिष्ठिका, दै गुण माला हाथ।
दियौ पठइ श्रीराधिकहि, पायो तिहिं सब साथ ॥१०॥
प्रिय सखिन संग आय, तें पिय मुख रही निहार।
प्रिया बदन प्रीतम निरखि, दइ दोहनी डारि ॥ ११ ॥
दासन सब गैयाँ दुही लाल, दुहां ह्वै चारि।
धेनुनि कै दूध न घटै, छोडि दये थन हारि ॥ १२ ॥
आपस में वत्सरा लरे देखि, लाल मन भाइ।
बालक बत्स बिजार पुनि, लरें महा सुख पाइ ॥ १३ ॥
सब कौं सब ही ठोर में, बाँधें लै लै नाम।
दूध पठाइ सब ग्रेह में, नंद गये निज धाम ॥ १४ ॥
सखन सहित श्रीलालजू, करें सुकौतुक रंग।
श्रीनारायण धाम पुनि, गये नंद के संग ॥ १५ ॥
सालग्रामन की आरति, देखि सबै हरषाय।
जसुमति विष्णु प्रसाद पुनि, दीनों बहुत पठाय ॥ १६ ॥
जाकौ जैसें चाहियै, ताहि दयौ त्यौ नंद।
लै प्रसाद घर कौं गयें, लखि मुख गोकुलचंद ॥ १७ ॥
भइयनि के पुनि सुतनि कौ, नंद बुलाबत नित्त।
इकलै जैवें नांहि यों मिलि हरषित होइ चित्त ॥ १८ ॥
ता दिन नंद भ्राता जिते. न्यौते जसुमति जाइ।
नंद मध्य बैठे दाहिने उपनँद अभिनँद आइ ॥१९॥
बायें बैठे सनंद नदन, सामें हरि बलराम।
दाँएं मधु सुबलादि सब, सुभद्रादिक सब बाम ॥२०॥
भोजाई पिवरी तुंगी, तिनकौं आज्ञा दीन।
सब कौं पारस करौ तुम, पारस मांहि प्रवीन ॥२१॥
जसुमति पुत्र हि सैन सों, कहि पुनि सबही तात।
यह आछा जेंबो लला, जियें लाल बतरात ॥२२॥

भोजन करि लीनी चुलू, पान खाय सब जाय।
पुनि सब कौं लै नंदजू, बैठे अथाइ आय ॥२३॥
सखनि सहित हरि अटा पर, बैठे सनमुख आय।
प्यारी मुख अवलोक करि, हिय नहि हरष समाय ॥२४॥
प्यारी मुख ससि कौं निरखि, हरि चकोर हुलसात।
नेंन सेन की चातुरी, मिलन बात बतरात ॥
ललितादिक सखि रीझिकें, दिये वारि तन प्रान।
देखौ भाग दुहूंन के, दुहु अटा मिले आंन ॥२६॥
तुलसी कों जसुमति कही, करौ प्रसाद तुम जाय।
बिन राधा नहिं खात यह, दासी कही जनाय ॥२७॥
सुनि जसुमति हरषित भई, रोहिनि लई बुलाइ।
अन्न व्यंजन आदिक जिते, उबरा दये भराइ ॥२८॥
हरि अवसेस स्रजादि सब, दिये धनिष्ठा आनि।
तुलसी कस्तूरीका संग, गई बहुत सुख मानि ॥२९॥
राधा की स्रज सुवल को, धनिष्ठा दई दुराइ।
पुनि संकेत की कुंज जो, कही ताहि समझाई ॥३०॥
पाछें जेंई जसोमति, पहिलै सबनि जिबाइ।
तुलसी जाय प्रसाद दै, कहि सब बात सुनाइ ॥ ३१ ॥
राधा लै सब सखिन कौं, गई सु भोजन धाम।
हरि पौढे तब बधू कों, सास बोलि लै नाम ॥ ३२ ॥
कही बिसाखा श्रमित है, बधू सु सुनि दुख पाइ।
थाल परोस दै कहि पुनि, हित सों ज्याबौ जाय ॥ ३३ ॥
बचन बिसाखा सुन्यौ सब, बैठी भोजन हेत।
हरि अवसेस निहारि करि, नेन नीर भरि लेत ॥ ३४ ॥
दांए ललिता बांए पुनि, बिसाखा सोभित जानि।
चहूं और सब सखि पुनि, एक जीय तन प्रान ॥ ३५

रूपमंजरी तुलसीका, पारस कियौ सुजानि।
मन मान्यौ सबहिन लयौ, जेंहू सब सुख मानि ॥ ३६ ॥
थोरो भोजन बहुत भयौ, राधा दृष्टि तें जानि।
मंदिर गई सु चुलू लैं, दासी दीनें पान ॥ ३७ ॥
दासी चरण पलोट ही, पौढी जाय पलंग।
कहन लगि कोउ भागें तें, होइ पिय कौं फिर संग ॥३८॥
तुलसी सब दासी कों, भोजन दियौ कराय।
रूप मंजरी दियौ पुनि, वृंद हि थाल पठाइ ॥ ३९ ॥
खान पाँन करि चाव करि, राधा चकित्ति पान।
सेवत सब राधा चरण, सब की जीवन प्राण ॥ ४० ॥
श्री गदाधर चैतन्य पद, सरण दामोदर दास।
सुमरणमंगल कौं कियौ, सुछम छठौ प्रकास ॥ ४१ ॥

इतिश्री दामोदरदासकृत सुमरणमंगल
षष्ठ प्रकास ॥

॥ सप्तम प्रकास ॥

आवै अथाईं नंद जू, आये गोप सुख पाइ।
नृत्यकार संगीत के, गुणि सब आये धाइ ॥ १ ॥
पंडित जगा रु भाट पुनि, बंदीजन स हजार।
ब्रज के आयें भांड नट, नंद कियौ सतकार ॥ २ ॥
कृष्ण दरसन की कामना, रही सबन चित्त छाय।
सखनि संग आये हरि, लखि सब उठे हरषाय ॥ ३ ॥
पाग गुलाबी शीश पर, कलंगी धरी बनाय।
घूंघरवारी अलक छवि, तिलक कही नहिं जाय ॥ ४ ॥
बदन चंद रु बुलाक पुनि, सोभित नासा माहिं।
भोंह धनुक दृग बान तें, कोउ बच्यौ जन नाहिं ॥ ५ ॥
कानन मोती जगमगत, कंठ सु सोहत माल।
भुज में बाजूबंद पुनि, जरे लाल सुरसाल ॥ ६ ॥

करा ऐंठवा मूँदरी, पहुची रेखा लाल।
पदक हार पुनि मनिन के, सोभित वच्छ विसाल ॥ ७ ॥
त्रिवलि सोहत उदर में, नाभि रोम सु मृणाल।
कटि में सोहत पीत पट, किंकिणि बजत सुताल ॥ ८ ॥
उपरेना सोहत सु तन, जंघा कदली जान।
नूपुरादि भूषन निकर, हरति सबनि के प्रान ॥ ९ ॥
कृष्ण सरूपहि देखिकें, सबहि जन हुलसात।
गुरु द्विज पितृ कुल कौ नये, सखनि और मुसिक्यात ॥१०॥
यथा योग सनमान कियौ, सबकौं दुहुंनि सुजाय।
बैठे जाय पिता निकट, पहलें सबनि बैठाय ॥ ११ ॥
सबै गुनी इक बेर सब, गुनिन कहत उच्चार।
तुमल सब्द सुनि नंद कही, कहौ सु इक इक वार ॥१२॥
पहिल पुरान रु बेद पुनि, सुने सबनि सुख पाइ।
नृत्य गीत पुनि आदि दै, सुनै सबै सुरषाइ ॥ १३ ॥
बहुत वस्त्र भूषण दियें, लिये वृत्ति के हेत।
कृष्ण दृष्टि सों धन सदन, होत सु रमा समेत ॥ १४ ॥
लखि विलंब जसुमति दियौ, रक्तक दास पैठाय।
कहिकें बाबा नंद सों, ल्यावो दुहुँनि बुलाय ॥ १५ ॥
दूध प्याय जसुदा सबनि, सखनि बिदाय देत।
लै गइ जसुदा रोहिणी, दुहुनि सो सोवनि हेत ॥ १६ ॥
पौढ़े लाल पलंग पर, न्यारे मधु बलराम।
चरण पलोटत दास सब, मात गई निज धाम ॥ १७ ॥
आलस लखि दासो गये, नंद पधारे धाम।
उपनंदादिक जाय गृह, कियौ सु सुख विश्राम ॥ १८ ॥
पलका तें उठि राधिका, गुनियनि पास बुलाइ।
लै के सखी समाज कौ, दियौ संगीत सिखाय ॥ १९ ॥

देखि उजारी राधिका, मन बृंदाबन जाय।
चली प्रिया सब सखिन लै, उचित सुवेस बनाय ॥ २० ॥
अंधियारे में स्याम सब, उजियारे सब सेत।
समें उचित सिंगार करि, राधा सखिन समेत ॥ २१ ॥
छांह देखि राधा चलत, भूषण शब्द न होइ।
पात गिरत डरपै सखि, विपिन मांहि है कोइ ॥ २२ ॥
तबै जमुन के निकट में, देख्यौ विपिन सु आय।
दह पर रवि मंदिर लह्यौ, जाय तहां वर पाय ॥ २३ ॥
कमल रूप सब आदि ब्रज, समें मुदित विकसात।
जितक आहि सो सब कछु,दुहुवनि लखि हुलसात ॥२४॥
योग पीठ बन मध्य पुनि, गोविंद स्थल नाम।
सखिन सहित आइ राधिका, बृंदा दिखावत धाम ॥२५॥
कमल सहस्रदल रूप पुनि, योगपीठ कों जान।
उत्तर पूरव पछिम दिसा, घिरयौ यमुन सु मानि ॥ २६ ॥
चित्र विचित्र बनी सिढ़ी, बीच बीच में घाट।
छतरी सोहत मनिन की, कुटीर और कपाट ॥ २७ ॥
राधा तीन सु जमुन की, पुलिन सु मंगल धाम।
बृच्छ झुकें चहुं ओर पुनि, कहतहि हित अभिराम ॥२८॥
बिना नये इह जुगल कों, धाम लहे सो कोंन।
हम सुख दुख सम धारिकें, पायो है यह भोंन ॥ २९ ॥
हेममयी अवनी सहज, बृच्छलता बहु रूप।
रतन खचित सब थांवरे, खग गावत रस भूप ॥ ३० ॥
बाग नारियर पूग के, तिनकी छवि सु अपार।
वाके ओरें सु आंब बन, फल फूलनि नइ डारि ॥ ३१ ॥
बृंदा की दासी बहुत, करत फूल फल ढेर।
लतनि बाग में सिंह मृग, मोर करत कल टेर ॥ ३२ ॥

उरें फूल के बाग हैं, मंदिर छवि के सार।
तख तारौ मणि हेम के, सोहत फल सु अपार॥ ३३॥
उरें बाग केरानि के, राजत पौंधनि संग।
पात फूल फल छाह हित, करे भानुसों रंग॥ ३४॥
ऐसे बाग स चहुँदिसी, बीच सु मंदिर जानि।
रतन जरयौ ऊँचौ बहुत, धुजा पताका मांनि॥ ३५॥
मंदिर मध्य सु चित्र बहु, पुतरी सखी समान।
साज युत्त पलिका रतन, सिंहासन सुभ जानि॥ ३६॥
चारि द्वार मनि जटित पुनि, सिंह कपाट अभिराम।
स्वर्ण सिंह पुनि आठ जनु, उडि गयौ चहै धाम॥३७॥
चारि दिसा में कलपद्रुम, सोहत अति विस्तार।
तिनके साखा गगन पुनि, तीन लोक मनहार॥ ३८॥
पारिजात मंदार पुनि, हरिचंदन संतान।
व्यापि रहै विदिशान में, देत मनोरथ दान॥ ३९॥
मंदिर बाहिर कुंज पुनि, ललितादिक की जान।
हेम मनिन की रूप बहु, सोभा पुंज बखान॥ ४०॥
कुंजनि बाहर बाग पुनि, सुभग थांवरे जानि।
गरछाती पुनि नाभि सम, कर जंघा अनमान॥ ४१॥
वृच्छनि में झूला बहुत, सोहत कमलाकार।
को बरनें तिन को अहो, मनो भवन छबि सार॥ ४२॥
ऐकै वृच्छ अनेक बिधि, पात फूल बहु भाँति।
मणि स्वर्ण के रंग के, खग सु बहुत किलकांति॥ ४३॥
लता वृच्छ बन भवन ते, सबै कलपतरु जानि।
लीला देखन हेत सब, भये देबता आनि॥ ४४॥
मारग चारि जरे रतन, मंदिर के चहुं ओर।
लगें बिपछीन कों नदी, द्रुम मग कै दुहुं ओर॥ ४५॥

बृंदा दियौ दिखाइ सब, राधा लखि अकुलांहि ।
बिरह बिबस ह्वै पीय कौं, देखि सब ही माहि ॥ ४६ ॥
पत्र गिरत जो वृच्छतें, मानत प्रीतम जात ।
दौर लखें ता बृछें कों, बिन देखें अकुलात ॥ ४७ ॥
दोउ माता जब घर गई, तब हरि करि सुविचार ।
चले वेगि बृंदा बिपन, दास बैठाय द्वार ॥ ४८ ॥
खिरकी द्वार गये निकसि, पुनि मन में भय मानि ।
छांह देखि चलें पलक में, ब्रज धर मिलये आनि ॥ ४६ ॥
राधा छिपी निकुंज में, बृंदा दिये द्वै फूल ।
पिय पूछी प्यारी कहाँ, मेरी जीबनि मूल ॥ ५० ॥
तब कही प्यारी ग्रह निज, आई हम फुल लैन ।
रोक्यौ कंस अभिमन्यु कौं, तातें कोंहु न चैंन ॥ ५१ ॥
अंग स गंधहि पाये हरि, तकै बृंदा के नैन ।
तहां जाइ पाई सु तब, दई बृंदा जब सेंन ॥ ५२ ॥
दोऊ मिलि अति हरष सौं, करि केलि बहु रंग ।
बाही मंदिर में गये, प्रिया लियैं निज संग ॥ ५३ ॥
कियौ कौतुक सखिन सों, राधा लखि हरषात ।
हरि चितबनि हीतें मिलन, सुख अपार ह्वै जात ॥५४॥
श्री गदाधर चैतन्य पद, सरण दामोदर दास ।
सुमरन मंगल कै कियों, सूछम सात प्रकास ॥ ५५ ॥

इति श्री दामोदर दासकृत सुमरन मंगल
सप्तम प्रकास ॥

अष्टम प्रकास ।

बृंदा दुहुँ कों सखिन संग, बड़ी छतरी में ल्याय ।
मन भायें भूषन बसन, दीनें सबनि बनाय ॥ १ ॥
माला बंदन पान पुनि, खाये सबनि सुख पाय ।
लाल लाडिली संग पुनि, बैठे जमुन तट आइ ॥ २ ॥

मंडल पुलिन रुचादि सब, देखि दुहूं हुलसात ।
खग नग विपिन सु देखिके, रोम रोम पुलकात ॥ ३ ॥
मन भै रास विलास सों, बंशी में कही बात ।
गरवाहिं फिरें सखिन संग, देखत द्रुम फल पात ॥४॥
क्यारी तखतारौस करि, सोभित फूल अपार ।
खग मृग भ्रमर सु मत्त ह्वै, करत मधुर झनकार ॥ ५ ॥
हरि पूछी सब की कुसल, करि सब को सनमान ।
बन देखत आये उ; बंसीबट तट जानि ॥ ६ ॥
रतन खची बहु छत्तरी, ता पर बैठे जाय ।
राधा तीन सुजमुन की, पुलिन देखि हरषाइ ॥ ७ ॥
प्यारि संग चलै पुलिन कौं, जमुना आई धाय ।
तरंग हाथ सों दुहुं पगनि, दीन कमल चढ़ाय ॥ ८ ॥
कालिंदी सौ ह्वै हरषि, पुलिन कें मंडल जाइ ।
प्रिया संग हित सौं फिरत, करत खेल मन भाइ । ९॥
मंडल करि नाचें सखी, ह्वै पुनि यूथ अनेक ।
नाचें बीच स प्रिया प्रिय, सब दिसि कियौ मुख एक॥१०॥
जिती प्रिया तिते प्रिये, सोभा बरनें कौंन ।
चक्रव्याधि फिरें पवन ज्यौ, मिलि सब धारयौ मौंन ॥११॥
मिलि गावैं पुनि नाच ही, रीझत आप रिझाइ ।
चुंबन लिंगन दान में, लाल रीझि मुसक्याइ ॥१२॥
रासमंडल आये सबै, नृत्य करत रस सींच ।
कभूं एक कभु बहुत पुनि, कभुं दोई सब बीच ॥१३॥
ताल बलय कांचि बंसी, इक स्वर नचि करें गान ।
राग रागिणी यंत्र में, गुणी मिलावत तान ॥१४॥
नृत्य के प्रथम सुताल दें, तिन के भेद अनेक ।
नाचै दोऊ सखिन में, चूकें नाहिन एक ॥१५॥

प्रिया ताल दें हरी नचें, प्यारी नाचें लाल ।
पीय चिकित इक प्रेम सों, नाचि जनावत बाल ॥१६॥
सखिन सहित राधा हर्षि, करी नृत्य बहु भाँति ।
बंद टूट अंगियादि के, वांछि लाल मुसिक्यात ॥१७॥
कठिन ताल सों नाच ही, दोउ कहें को ताहि ।
तन मन वारि सखी कहै, हम तें तूसरि आहि ॥१८॥
आय बताई ताल जे, तिन सों नचि कियौ गान ।
सित्र विध नारायण करी, तिनसों नचि लई तान ॥१९॥
औरनि रमा रू गोपियनि, रची हुती जे ताल ।
तिन हूँ सो गाये नचे, राधा संग नँदलाल ॥ २० ॥
मंडल करि दोउ प्रिया पिय, बैठे पुलिन सु जाय ।
बृंदा मधु प्यालैं दिये, पिये महा सुख पाय ॥ २१ ॥
करि ढंगार भूली सबनि, तन सुधि कोउ हसात ।
कौऊ बकै कौउ रु पुनि, बुद्धिसि गहि बतरात ॥२२॥
कृष्ण फिरे संग सखिन के, प्यारी की सुधि नाहिं ।
कीनी केलि दुहुंनि मिलि, कुंज महल के मांहि ॥२३॥
बृंदा दीनी सखीन कौं, न्यारी न्यारी कुंज ।
सोई सब पलका नियें, लखैं सखी सुख पुंज ॥२४॥
पिय प्यारी अद्भुत मिलन, लखि बृंदा चित प्रीति ।
करत बिहार सुमत्त ह्वै, होत केलि विपरीत ॥ २५ ॥
क्रीड़ा पिछें कियौ दोउ, अरस परस सिंगार ।
आय पुलिन दुहुंवनि कियौ, बृंदा सहित विचार ॥२६॥
हरि हि कहि प्रिया सेंन सों, ल्यावों सखिन तुम जाइ ।
लाल रूप बहु धारि कें, करी केलि मन भाई ॥ २७ ॥
पिय सिंगारी सखी सब, सखियनि पिय सिंगार ।
आए बाहर एक ह्वै, रूप महा मनोहार ॥ २८ ॥

लज्जा सों नई नारि सब, राधा पूछी बात।
इहां लाल बृंदा सहित, कहाँ लगे नख गात ॥ २९ ॥
प्रिया कही कोउ नायक, कीनो सब सों रंग।
तुमरे चिन्ह सरीर में, मति बैठौ हम संग ॥ ३० ॥
ललिता बोली क्रोध सों, सुन हौ सठ मौ बैंन।
रति में तुम नाचें भलें, हमें लगे सिख देन ॥ ३१ ॥
पतिब्रता ब्रज ख्यात है, हम न रहैं तुम पास।
तुमें नचावत सदा ज्यौं, तासौं करौ विलास ॥ ३२ ॥
वचन विलास कियौ बहुत, आये जमुना संग।
राधा स्याम सब सखिन सौं, किये खेल बहुरंग ॥३३॥
उवटन आदि लगाय दोउ, न्हाय सु अति हरषाहिं।
सूके वसन सु पहर कै, आये मंदिर माहिं ॥ ३४ ॥
वृंदा द्रुम तें फलनि लै, दिये बेस निकारि।
कियौ सखिन संग प्रिया कौ, स्याम सु सख सिंगार ॥३५॥
सखि सिंगार करि प्रेम सों, देखत लाल सरूप।
हांसी कौतुक नेंन सों, करत सु रसिक अनूप ॥ ३६ ॥
बैठी मंडली बांधि सब, भोजन मंदिर जाइ।
मेवा मिठाई के राग हर, वृंदा दीनें आइ ॥ ३७ ॥
गृह तें ल्याई है प्रिया, बरा मिठाई ढेरि।
जै करि सोरा सेन गृह, तहाँ गए दोउ फिरि ॥ ३८ ॥
परम सु मंदिर नाम है, बैठे सेज दोउ जाय।
पान खाय अति हरष सों, पौढ़ि रहे सुख पाय ॥ ३९ ॥
पुनि ललिता रु विसाखिका, बैठी पलंग बिछाय।
हरि चर्वित तांबुल पुनि, खाय महा सुख पाय ॥ ४० ॥
रूप मंजरी आदि त्यौं, राधा चर्वित खाय।
जुगल चरण सेवन लगि, पंखा चँवर हलाय ॥ ४१ ॥

ललितादिक सब सखिन संग, पौढ़ी मंदिर मांहि ।
जानि आपनी ईश्वरी, टहल करत हरषाहिं ॥ ४१ ॥
लाख सखि सेवा परा, बाहर पलंग बिछाइ ।
पौढ़ि रही सब जाइ करि, अति आनंद हि पाइ ॥ ४२ ॥
वृंदाबन में जुगल की, लीला बहुत अपार ।
नित्य नौतम नाना सु विधि, करी दर्श प्रचार ॥ ४४ ॥
अष्टक श्रीजुत रूप को, देखि कियौ मन बोध ।
करि बिचार अति प्रीत सों, लेहु सुकबि यह सोध ॥४५॥
सालग्राम न्हबाईये, कैसें हु जल ढारि ।
चरणांमृत ताहि जानि करि, संत लेत सिर धारि ॥४६॥
दुष दामोदरदास कौं, मति रसिकनि जिय आय ।
अष्टक आठ सकाल कौं, ग्रहण करौ चित लाय ॥४७॥
राग मार्ग हित मानसी, सेवा करौ जिय लाय ।
राधाकृष्ण सखि नय युत, मिलै जु निश्चैं जाय ॥४८॥
पाठ करै हित सौं सदा, होय सिद्ध सब काम ।
लाल लाड़िली कृपा सों, पावैं बृंदा धाम ॥ ४९ ॥
धर्म मोक्ष मुनि भोग जे, और जिते सुख आहि ।
पाठ मनोहर के करे, मिलैं तिहीं छिन ताहि ॥ ५० ॥
श्री गदाधर चैतन्य पद, सरण दामोदरदास ।
सुमरण मंगल के किये, सुछम अष्टम प्रकास । ५१॥

इति श्री दामोदरदास कृत सुमरण मंगल
अष्टम प्रकास ॥
सुमरणमंगल की भाषा समाप्ता ॥
लिपीकार—कृष्णदासकुसुमसरोवर वाले
प्रकाशनार्थं लिखे हैं ॥
सं० २००६, नृसिंहचतुर्दशी के दिवस ।

॥ श्री राधिकायै नमः ॥

सेवा परायणानां सखीनां क्रिया ॥

वस्त्रालङ्कारपात्रादिनीरताम्बूलसंस्क्रिया ।
चन्दनोद्घृष्टिकुसुमदन्तकाष्ठसमर्पणं ।
उद्वर्त्तनाद्यिचतुःसमेन मार्जनादिनिर्माणं ।
सौगन्धितेलेनैवास्याः केशरञ्जनं उद्वर्त्तनक्रिया ।
आमलकी कल्कादिभिः केशसंस्कारस्नापनं ॥

चीनवस्त्रेणांगात् केशाच्च पानीयोत्सारणं वर्ण निर्म्माणं। वस्त्रपरिधानं । अगुरुधूमेन केशानां संस्कृत्य सुगन्धि-सम्पादनं । वेशरचना । लाक्षारसेन चरणयोरञ्जनं । सूर्य्यार्थमर्घ्यनिर्म्माणं । ईशासङ्कया विस्मित मुक्तामालादि-कुञ्जादानयनं । पाकार्थं नन्दीश्वरं व्रजन्त्याः श्री वृन्दाबनेश्वर्य्या स्ताम्बूलाम्बुपात्रादिग्रहणपूर्वकमनुगमनं । पाकरचनायां स्वानुरूपकार्य्याचरणं । श्री कृष्णभोजनादयवलोकनं । श्री वृन्दा-बनेश्वर्य्या बीजनादिभिः सेवनं । श्री कृष्णावशेषाशनेऽपि तस्यारतैःसेवनं । पाटलादिवासितशीतलोदकसमर्पनं । आचमनपात्रादिसमर्पणं । कर्पूरादिसंयुक्ताम्बूलसमर्पनं। परिहितपीताम्बरादिं सुवलदारा श्रीकृष्णं प्रति समर्पणं। गोचारणार्थं वृजिनं व्रजन्तं श्री कृष्णमनुव्रजन्त्याः तदनन्तरं पुन र्यावटग्रामं गच्छन्त्याः सखिवृन्दाया श्री वृन्दाबनेश्वर्य्या स्ताम्बूलपात्रादिग्रहणपूर्वकमनुगमनं । मिथः सन्देशाभ्यां-द्वयोरानन्दनं ।

पुनस्ताम्बूलाम्बुपात्रादिग्रहणपूर्वकं श्रीराधिकाया अभिसारणं । संगमनं । कुञ्जोपस्कारः । माध्वीकपूर्णं चम्पकस्य पुरतो धारणं । ताम्बूलचर्व्वितास्वादनं । कुञ्जान्निष्क्रामणं । बिलासावलोकनं । परिमलावघ्राणं। मञ्जीरकलसिञ्जितश्रवणं।

पदचिन्हावलोकनं । बिलासावसाने निकुञ्जप्रवेशः पादसम्बाहनादिकं । पाटलादिपरिवासितशीतलोदकसमर्पणं । चित्रनिर्माणं । चतुःसमेन चर्च्चा । हारगुम्फनं । पुष्पावचयनं । बैजयन्त्यादिगुम्फनं । हारादिपुष्पमालादिगुम्फनकौतुकं कुर्व्वतो तयोर्हस्ते मुक्तादिपुष्पादिनिधानं । हारमाल्यादिपरिधापनं । कङ्कतिकया केशसंस्कारः केशप्रसाधनं । नेत्ररञ्जनं । अधररञ्जनं । चिबुके कस्तुर्य्यादिबिन्दुनिर्म्माणं । अनङ्गगुटिकासीधुम्बित्नासादिसमर्पणं । मधुफनारचनं । तत्संस्कारः । तत्समर्पणं । कुचनपत्रक्रिया । मिथो मर्म्माकर्णनं । बनबिहारबसन्तलीला—हिन्दोललीला—जलबिहार—द्यूतक्रीडादयबलोकनं । बनबिहारे महत्यादिधारणपूर्वकानुसर्पणं । स्वकचवृन्देन पादपद्मद्वयसम्मार्जनं च । बसन्तलीलायां सौगन्धिद्रव्यपूर्ब्बं यन्त्राणि पूरयित्वा श्रीवृन्दाबनेश्वर्य्यादिनां हस्तेषु तेषां समर्पणं । हिन्दोललीलायां सगाढ़हिन्दोलनं । जलबिहारे बस्त्रालङ्कारादिग्रहणपूर्वकं श्रीकुण्डतीरे स्थित्वा द्यूतक्रीडायां जयिन्याः श्रीबृन्देवनेश्वर्य्या आज्ञापालनं । हृतसुरङ्गादिवर्णकुच्चर्द्दीनां बनाद्यानयनं । नर्म्म प्रयोगश्च । अर्काच्चने स्वानुरूप कार्य्याचरणं । भोज्यस्य सम्पादने स्वानुरूपकार्य्याचरणं । स्नपने पानीयोत्सारणः । वेशरचनादिः । भोज्यस्य व्रजराजालये नयनं । ताम्बूलवीटिका पुष्पमाल्ययो सुवलद्वारा श्रीकृष्णं प्रतिसमर्पणं । सङ्केतकुञ्जकथनं च । व्रजराजालयात् श्रीकृष्णावशेषादेरानयनं । तस्य परिवेशनं । धूपेण घ्राणानन्दनं । पाटलादिवासित शीतलोदकसमर्पणं । आचमनपात्रादिसमर्पणं । कर्पूरादि संस्कृत्वा ताम्बूलसमर्पणं । ईशाशेषामृतास्वादनं । समयानुरूप वस्त्रालङ्कारपरिचर्य्यादिभिः श्रीवृन्दावनेश्वर्य्याः प्रसाधनं । अभिसारणादि । रासे लास्यादिमाधुरीविलोकनं । श्रीवृन्दावने-

श्वर्य्या अनुप्रकरणजितवैभवः । श्रीकृष्णवंशीकलामाधुरि श्रवणं । तयोर्गानमाधुरीश्रवणं । श्रीकृष्णवंशीदम्भकप्रापक श्रीराधिकायाः महत्यादिमाधुरी समाकर्णनं । तौर्य्यत्रिकेन ससखिवृन्दयोरानन्दनं । ताम्बूलगन्धमाल्यव्यजनहिमपय पादसम्वाहनाद्यैस्तयोः सेवनं । मिथः चित्रं कुर्व्वतो स्तयोर्हस्तेन तुलीवर्णकचयनिधानं । परस्परं वेशं कुर्व्वतोस्तयोर्हस्ते मुक्तामालादिसमर्पणं । मङ्गलनिराजनं । कुञ्जाद्गृहं व्रजन्त्या श्रीबृन्दावनेश्वर्य्यास्ताम्बूलाम्बुपात्रादिग्रहणपूर्वकमनुसर्पणं । त्रुटितहारादिपुष्पमालादिविचितिः । विचितानां शीघ्रगमनाय वस्त्रान्ते वन्धनं । ताम्बूलचर्व्वितादेर्व्विभागः ॥

इति श्रीरूपगोस्वामिविरचिता
संक्षेपअष्टकालिनसेवा
समाप्ता ॥

नारद उवाच—

भगवन् सर्वसाख्यातं यद्यत् पृष्टं मया गुरो ! ।
अधुना श्रोतुमिच्छामि भावभार्गमनुत्तमम् ॥ १ ॥

शिव उवाच—

साधु विप्र ! त्वया पृष्टं सर्वलोकहितैषिणा ।
रहस्यमपि वक्ष्यामि तन्मे निगदतः शृणु ॥ २ ॥
दास्यः सखायः पितरो प्रेयस्यश्च हरेरिह ।
सर्वे नित्या मुनिश्रेष्ठ ! वसन्ति गुणशालिनः ॥ ३ ॥

नारद जी बोले, हे भगवान ! हें श्रीगुरो ! मैं ने जो जो पूछा सो सब आपने कहा ! अब सब से उत्तम भाव मार्ग का सुनना चाहता हूँ ॥ १ ॥ शिवजी बोले—हे विप्र ! समस्त लोक के हित चाहने बाला तुम ने उत्तम पूछा, मैं गुप्त रहस्य कहूँगा मुझ से रागमार्ग का श्रवण करो ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण के दास

यथा प्रकटलीलायां पुराणेषु प्रकीर्त्तिताः ।
तथा ते नित्यलीलायां सन्ति बृन्दाबने भुवि ॥ ४ ॥
गमनागमने नित्यं करोति वनगोष्ठयोः ।
गोचारणं वयस्यैश्व विनाऽसुरविघातनम् ॥ ५ ॥
परकीयाभिमानिन्य स्तथा तस्य प्रिया जनाः ।
प्रच्छन्नेनैव भावेन रमयन्ति निजप्रियम् ॥ ६ ॥
आत्मानं चिन्तयेत् तत्र तासां मध्ये मनोरमाम् ।
रूपयौवनसम्पन्नां किशोरीं प्रमदाकृतिम् ॥ ७ ॥
नाना शिल्पकलाभिज्ञां कृष्णभोगानुरूपिणीम् ।
प्रार्थितामपि कृष्णेन तत्र भोगपराङ्मुखीम् ॥ ८ ॥
राधिकानुचरीं तत्र तत्सेवनपरायणाम् ।
कृष्णादप्यधिकं प्रेम राधिकायां प्रकुर्व्वतीम् ॥ ९ ॥

दासी, सखा सखी, माता पिता और कान्ता ओं सब नित्य, गुणशाली बिराजमान हैं ॥ ३ ॥ पुराणों में जैसा प्रकट लीला का वर्णन है ठीक उसी प्रकार बे सब नित्य लीला में वृन्दावन में बिराजमान हैं ॥ ४ ॥ वन और गोष्ठ दोनों में गमन, आगमन होता है । सखा ओं के साथ नित्य गोचारण करते हैं । वहाँ असुरवध नहीं है ॥ ५ ॥ श्रीहरि के प्रेयसियाँ परकीया-भिमानिनी हैं । बे सब गोपन भाव से प्राणबल्लभ श्रीकृष्ण के साथ रमण करते हैं ॥ ६ ॥ सखी भाब से उपासना करने बाला साधक अपने को उन गोपियों के बीच में मनोरमा, रूप-यौवन से युक्त, किशोरी, तरुणी रूप ध्यान करे ॥ ७ ॥ आपने को नाना प्रकार शिल्पकलाओं को जानने बाली, श्रीकृष्ण के भोगानुकूल करने वाली, श्रीकृष्ण से प्रार्थना करने पर भी भोगों स परांङ्मुख रहने वाली, श्रीराधिका की अनुचरी, श्रीराधिका सेवा परायणा, श्रीहरि से भी राधिका में अधिक

प्रीत्यानुदिवसं यत्नात् तयोः सङ्गमकारिणीम् ।
तत्सेवनसुखाल्हादभावेनातिसुनिव्वृताम् ॥ १० ॥
इत्यात्मानं विचिन्त्यैव तत्र सेवां समाचरेत् ।
ब्राह्मं मुहूर्त्तमारभ्य यावत् स्यात् तु महानिशा ॥ ११ ॥

नारद उवाच—

हरे दैनन्दिनीं लीलां श्रोतुमिच्छामि तत्वतः ।
लीलामजानता सेव्यो मनसा तु कथं हरिः ॥ १२ ॥

शिव उबाच—

नाहं जानामि तां लीलां हरेर्नारद तत्वतः ।
बृन्दादेवीमितो गच्छ साते लीलां प्रवक्ष्यति ॥ १३ ॥
अविदूर इतः स्थानात् केशीतीर्थसमीपतः ।
सखीसङ्गवृता सास्ते गोविन्दपरिचारिका ॥ १४ ॥

प्रेम करने बाली गोपी रूप से ध्यान करे ॥ ८ । ९ ॥ और भी अपने को प्रतिदिन प्रीति के साथ दोनों का मिलन कराने वाली, दोनों के सेवन सुख को आनन्द भाव से परम शान्त रूप से ध्यान करता हुआ ब्राह्ममुहूर्त्त से लेकर महानिशा पर्य्यन्त सेवाचरण अर्थात् स्मरण करे ॥ १० । ११ ॥

नारदजी बोले—मैं श्रीकृष्ण की दैनिन्दिनी लीला तत्व के साथ सुनना चाँहता हूँ । लीला को नहीं जानने बाला मन से श्रीकृष्ण की सेबा किस प्रकार कर सकता है ॥ १२ ॥

महादेवजी बोले—हे नारद ! मैं हरि की उस लीला को तत्व से नहीं जानता हूँ । तुम बृन्दावन की अधिष्ठात्री बृन्दा-देवी के पास जाओ, वह तुम को लीला सुनावेगी ॥ १३ ॥ यहाँ से अति निकट केशीघाट है, उस के पास वह गोबिन्द सेविका बृन्दा सखियों के साथ रहती है ॥ १४ ॥ इधर सूतजी सुनाते हैं—

सूत उवाच—

इत्युक्तस्तं परिक्रम्य हृष्टो नत्वा पुनः पुनः ।
वृन्दाश्रमं जगामाथ नारदो मुनिसत्तमः ॥ १५ ॥
वृन्दापि नारदं दृष्ट्वा प्रणम्य च पुनः पुन ।
उवाच च मुनिश्रेष्ठ ! कथमत्रागतिस्तव ॥ १६ ॥

नारद उवाच—

त्वत्तो वेदितुमिच्छामि नैत्यिकं चरितं हरेः ।
तदादितो मम ब्रूहि यदि योग्योऽस्मि शोभने ॥ १७ ॥

बृन्दोवाच—

रहस्यमयि वक्ष्यामि कृष्णभक्तोऽसि नारद !
न प्रकाश्यं त्वयाप्येतद् गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥ १८ ॥
मध्ये बृन्दावने रम्ये पञ्चाशत् कुञ्जमण्डिते ।
कल्पबृक्षनिकुञ्जे तु दिव्यरत्नमये गृहे ॥ १९ ॥

शिवजी से इस प्रकार कहे हुए मुनिबर नारद जी प्रसन्न होकर परिक्रमा करते हुए वृन्दा के आश्रम को गये ॥ १५ ॥ वृन्दा ने नारद जी को देख कर बार बार प्रणाम कर कहा-हे मुनिराज ! आप यहाँ कैसे आये ॥ १६ ॥ नारद जी बोले -हे शोभने ! मैं तुम से श्रीकृष्ण की दैनन्दिनी लीला सुनना चाँहता हूँ । यदि मैं योग्य हूँ तो उसे आरम्भ से सुना ओ ॥ १७ ॥ बृन्दा बोली—हे नारद ! तुम कृष्ण के परम भक्त हो, मैं रहस्य पर्य्यन्त भी कहूँगी पर गुप्त से भी अधिक तर गुप्त उसे अन्यत्र कहीं प्रकाश मत करना ॥ १८ ॥ पंचा सत् कुञ्जों से मण्डित मनोहर श्रीबृन्दाबन में कल्पबृक्षों का निकुञ्ज हैं । उस में दिव्य रत्न से शोभित मणिमय गृह में पलङ्ग के ऊपर गाढ आलिङ्गिन के साथ राधा कृष्ण दोनों शयन करते हैं । पीछे मेरे आज्ञाकारी

निद्रितौ तिष्ठतस्तल्पे निविडालिङ्गितौ मिथः ।
मदाज्ञाकारिभिः पश्चात् पक्षिभिर्बोधितावपि ॥ २० ॥
गाढ़ालिङ्गनजानन्दमाप्तौ तद्भङ्गकातरौ ।
न मनः कुरुतस्तल्पात् समुत्थातुं मनागपि ॥ २१ ॥
ततश्च सारिकासंघैः शुकाद्यैः परितो मुहुः ।
बोधितौ विविधैर्वाक्यैः स्वतल्पादुदतिष्ठताम् ॥ २२ ॥
उपविष्टौ ततो दृष्ट्वा सख्यस्तल्पे मुदान्वितौ ।
प्रविश्य सेवां कुर्व्वन्ति तत्काले ह्युचितां तयाः ॥ २३ ॥
पुनश्च सारिवाक्यैस्तावुत्थाय स्वतल्पतः ।
गच्छतः स्वस्वभवनं भीत्युत्कण्ठाकुलौ ततः ॥ २४ ॥
प्रातश्च बोधितो मात्रा तल्पादुत्थाय सत्वरः ।
कृत्वा कृष्णो दन्तकाष्ठं बलदेवसमन्वितः ॥ २५ ॥
मात्रानुमोदितो याति गोशालां सखिभिर्वृतः ।
राधापि बोधिता विप्र वयस्याभिः स्वतल्पतः ॥ २६ ॥

पक्षियों के जगाने पर भी-गाढ़ आलिङ्गन से उत्पन्न परम सुख को प्राप्त होते हुए उस का नष्ट होने के भय से तनक भी पलङ्ग से उठबे को मन नहीं करते हैं ॥ १९ ॥-२१ ॥ मेना, सुआ आदिक पक्षियों के चारौ ओर से बार बार "सेज में से उठिये" इत्यादिक विविध प्रबोध बाक्यों के कहने पर दोनों जागते हैं ॥ २२ ॥ हर्ष के साथ दोनों को सेज पर बैठा हुआ देख के सखियाँ निकुञ्ज में प्रबेश कर दोनों की तत्कालोचित सेबा करती हैं ॥ २३ ॥ फिर मेना ओं के बोलने पर दोनों गुरुजन के भय से भीत हो कर सेज पर से उठ मिलने के लिये उत्कण्ठित हो अपने अपने घर को जाते हैं ॥ २४ ॥ सबेरे यशोदा जी के जगाने से श्रीकृष्ण पलंक से उठ बलदेवजी के साथ दन्त धाबन करते हैं ॥ २५ ॥ फिर माता के कहने पर सखायों के साथ गोशाला को जाते हैं। हे विप्र ! उधर श्रीराधिका भी सखियों

उत्थाय दन्तकाष्ठादिं कृत्वाभ्यङ्गं समाचरेत् ।
स्नानवेदीं ततो गत्वा स्नापिता सा निजालिभिः ॥२७॥
भूषागृहे व्रजेत् तत्र वयस्या भूषयन्त्यपि ।
भूषणैर्विविधैर्दिव्यैर्गन्धमाल्यानुलेपनैः ॥ २८ ॥
ततः सखीजनैस्तस्याः खश्रूं संप्रार्थ्य यत्नतः ।
कर्त्तुमाहूयते स्वन्नं ससखी सा यशोदया ॥ २९ ॥

नारद उवाच—
कथमाहूयते देवि ! प्राकार्थं तु यशोदया ।
सती षु पाककर्त्तीषु रोहिणीप्रमुखास्वपि ॥ ३० ॥

वृन्दोवाच—
पूर्वं दुर्व्वाससा दत्तो वरस्तस्याः महामुने ! ।
इति कात्यायनीवक्त्रात् श्रुतमासीन्मया पुरा ॥ ३१ ॥

के द्वारा जागती हुई दंतून करती हैं । फिर निज प्रिय सखियों के द्वारा सुन्दर तेल लगा कर स्नानवेदी पर बैठ स्नान करती हैं ॥ २६ । २७ ॥ सखियाँ उन्हे भूषणगृह पर ले जा कर विविध प्रकार के भूषण, और मालाएं पहनाती हैं तथा सुन्दर गन्ध-द्रव्यों से श्री अंग का लेपन करती हैं ॥ २८ । अनन्तर यशोदा जी सखियों के साथ कुन्दलता के द्वारा श्रीराधिका की सास जटिला से प्रार्थना करती हुई अपनी रसोई के लिये राधिका को बुलाती हैं ॥ २९ ॥

नारद जी बोले—हे वृन्दे ! रसोई बनाने के लिये रोहिणी आदिक होने पर भी राधिका जी क्यों बुलाई जाती थी ? ॥३०॥ वृन्दा बोली हे महामुनि ! पहले मैं ने कात्यायनी देवी के मुख से एसा सुना है कि आगे ऋषि दुर्वासा ने राधा को यह बर दिया था कि हे देबि ! राधे ! तुम जो कुछ रांधोगी, सो मेरे अनुग्रह से अमृत के बराबर होगा, तथा उसे खाने बाले की

त्वया यत् पच्यते देवि तदन्नं मदनुग्रहात्।
मिष्टं स्यादमृतस्पर्द्धि भोक्तुरायुष्करं तथा ॥ ३२ ॥
इत्याह्वयति तां नित्यं यशोदा पुत्रवत्सला।
आयुष्मान् मे भवेत् पुत्रः स्वादुलोभात् तथा सती ॥३३॥
श्वश्वानुमोदिता हृष्टा सापि नन्दालयं व्रजेत्।
ससखीप्रकरा तत्र गत्वा पाकं करोति च ॥ ३४ ॥
कृष्णोऽपि दुग्ध्वा गाः काश्चिद्दोहयित्वा जनैः पराः।
आगच्छति पितुर्वाक्यात् स्वगृहं सखिभिर्वृतः ॥ ३५ ॥
अभ्यङ्गमर्दनं कृत्वा दासैः संस्नापितो मुदा।
धौतवस्त्रधरः स्रग्वी चन्दनाक्तकलेवरः ॥ ३६ ॥
द्विफालबद्धचिकुरैर्ग्रीवाभालोपरि स्फुरन्।
चन्द्राकारस्फुरद्भालतिलकालकरञ्जितः ॥ ३७ ॥
कङ्कणांगदकेयूर रत्नमुद्रालसत्करः।
मुक्ताहारस्फुरद्वक्षो मकराकृतिकुण्डलः ॥ ३८ ॥

परमायू बढ़ती जाएगी ॥ ३० । ३२ ॥ एसा समझ कर पुत्र-बत्सला यशोदा प्रतिदिन राधिका को बुलाती थी जिससे स्वादु के लोभ से मेरा पुत्र दीर्घायु हो ॥ ३३ ॥ सास की आज्ञा लेकर बह भी प्रसन्नता के साथ नित्य नन्दालय को जा कर सखियों के साथ रसोइ करती हैं ॥ ३४ ॥ श्रीकृष्ण भी गायों को दुहू के अथबा किसी किसी को दासों से दुहा के पिता के बोलने पर सखायों से वेष्टित हो अपने घर आते हैं ॥ ३५ ॥

दासों के द्वारा तैल मर्दन, स्नानादि कर धौतवस्त्र, माला, चन्दनादिक का धारण करते हैं। उन की गुही हुई अलकें दोनों और लटकती हैं जिससे कंठ और मस्तक चमकता है। भाल देश तिलक और अलक से रञ्जित हो कर चन्द्रमा की शोभा को धारण करता है। कंकण, भुजबन्ध, पहुँची, रत्न-

मुहुराकारितो मात्रा प्रविशेद्भोजनालयम् ।
अवलम्ब्य करं सख्युर्बलदेवमनुव्रतः ॥ ३९ ॥
भुंक्तेऽथ विविधान्नानि भ्रात्रा च सखिभिर्वृतः ।
हासयन् विविधैर्हास्यैः सखींस्तैर्हसति स्वयम् ॥ ४० ॥
इत्थं भुंक्त्वा तथाचम्य दिव्यशय्योपरि क्षणम् ।
बिश्रम्य सेवकैर्दत्ताम्बूलं विभजन्नदन् ॥ ४१ ॥
गोपवेषधरः कृष्णो धेनुबृन्दपुरः सरः ।
ब्रजवासिजनैः प्रीत्या सर्वैरनुगतः पथि ॥ ४२ ॥
पितरं मातरं नत्वा नेत्रान्तेनापि तं गणम् ।
यथा योग्यं तथा चान्यान् विनिवर्त्य वनं ब्रजेत् ॥४३॥
वनं प्रविश्य सखिभिः क्रीडयित्वा क्षणं ततः ।
विहारैर्विविधैस्तत्र वने विक्रीडते मुदा ॥ ४४ ॥

मुद्रिका से उनके हाथ शोभायमान है। बक्षः देश में मोतियों का हार चमकता है और कानों में मकराकार कुंडल शोभायमान होते हैं ॥३६-३८॥ माता के बार बार कहने पर सखा का हाथ पकड़ कर बलदेवजी के साथ भोजन गृह में प्रवेश करते हैं तथा वहाँ भाई और सखायों के साथ विविध प्रकार के भोजन करते हैं। विविध प्रकार हास्यों से सखाओं को हँसाते है तथा उनसे स्वयं हँसते हैं ॥ ३९ ॥ ४० ॥ इस प्रकार भोजनादिक कर के आचमन करते हैं और क्षण काल दिव्य खाटके ऊपर विश्राम कर सेवकों का दिया हुआ ताम्बूल चर्वण करते हैं. ४१॥ अनन्तर श्री कृष्ण ग्वाल बेष धारण कर धेनु समूह को आगे हांकते हुए बन के लिये यात्रा करते हैं। पहिले पिता माता को नमस्कार करके पश्चात् नेत्राञ्चल के इशारा से सब को यथा योग्य सन्मान दे पीछे लौटा देते हैं। बन में प्रवेश कर के सखाओं के साथ हर्षता के द्वारा विविध क्रीडा बिहार करते

वञ्चयित्वा ततः सर्वान् द्वित्रैः प्रियसखवृतः।
सङ्केतकं व्रजेद्धर्षात् प्रियासन्दर्शनोत्सुकः ॥ ४५ ॥
सापि कृष्णं वनं यातं दृष्ट्वा स्वं गृहमागता।
सूर्य्यादिपूजाव्याजेन कुसुमाहृतये तथा ॥ ४६ ॥
वञ्चयित्वा गुरून् याति प्रियसङ्गेच्छया वनम्।
इत्थं तौ बहुयत्नेन मिलित्वा कानने ततः ॥ ४७ ॥
विहारैर्विविधैस्तत्र दिनं विक्रीडतो मुदा।
दोलायाञ्च समारूढौ सखिभि र्दोलितौ क्वचित्।
क्वापि वेणुं करस्रस्तं प्रिययापन्हुतं हरिः।
अन्वेषयन्नुपालब्धो विप्रलब्धाप्रियागणैः ॥ ४९ ॥
हसितैर्बहुधा ताभिर्हासितस्तत्र तिष्ठति।
वसन्तवायुना जुष्टं वनखण्डं मुदा क्वचित् ॥ ५० ॥
प्रविश्य चन्दनाम्भोभिः कुंकुमादिजलैरपि।
निषिञ्चतो यन्त्रमुक्तैस्तत् पङ्कैर्लिम्पतो मिथः ॥ ५१ ॥

हैं ॥ ४२ ॥ ४४ ॥ फिर सखाओं को बञ्चना करते हुए दो तीन प्यारे सखा के साथ राधा दर्शन की उत्कण्ठा से हर्षता के द्वारा संकेत गृह को जाते हैं ॥ ४५ ॥ इधर राधिका जी श्री कृष्ण को बन में जाते हुए देख अपने घर आती हैं तथा सूर्य्य पूजादिक और फूल बीनने के बहाने देखा कर गुरुजनों को बञ्चना करती हुई श्रीकृष्ण संगईच्छा से बन को जाती हैं ॥ इस प्रकार बहु यत्नों से दोनों का मिलन होता है ॥ ४६ ॥ वहाँ हर्षता के साथ दिनभर विविध बिहारों से क्रीडा करते हैं। कहीं झूले पर बैठ कर सखियों के द्वारा झुलाये जाते हैं, कहीं हाथ से छूटी हुई बंशी को प्रिया जी छिपा के रख देती हैं जिसे श्री कृष्ण ढूढते हुए सहेलियों से छले जाते हैं। सहेलियों को विविध प्रकार हँसाते हुए स्वयं हँसते हैं। कहीं हर्षता के

सख्योऽप्येवं निषिञ्चन्ति ताश्च तौ सिञ्चतः पुनः ।
वसन्तवायुजुष्टेषु वनखण्डेषु सर्वतः ॥ ५२ ॥
तत्तत्कालोचितैर्नानाविहारैः सगणौ द्विज ! ।
श्रान्तौ क्वचिद् वृक्षमूलमासाद्य मुनिसत्तम ! ॥ ५३ ॥
उपविश्यासने दिव्ये मधुपानं प्रचक्रतुः ।
ततो मधुमदोन्मत्तौ निद्रया मीलितेक्षणौ ॥ ५४ ॥
मिथः पाणौ समालम्ब्य कामबाणवशं गतौ ।
रिरंसु र्विशतः कुञ्जं स्खलद्वाङ्मनसौ पथि ॥ ५५ ॥
क्रीडतश्च ततस्तत्र करिणीयूथयौ यथा ।
सख्योऽपि मधुभिर्मत्ता निद्रया पीडितेक्षणाः ॥ ५६ ॥
अभितो मञ्जुकुञ्जेषु सर्वा एवापि शिश्यिरे ।
पृथगेकेन वपुषा कृष्णोऽपि युगपद्विभुः ॥ ५७ ॥

साथ बसन्त पवन से युक्त बनखण्ड में प्रवेश करके पीचकारी ले चन्दनजल, केशरजलादिकों को छुटाते हैं तथा गूलाल आदिक द्रव्यों का लेपन परस्पर करते कराते हैं ॥ ४८ ॥ ५१ ॥ इस प्रकार बसन्तबायु से युक्त बनों में सखियाँ भी सींचन करती हैं वे दोनों फिर सींचते हैं ॥ ५२ ॥ सखी गण के साथ दोनों जैसा समय हो वैसा ही उचित नाना प्रकार के बिहार करते हैं। हे मुनिवर ! कहीं दोनों श्रान्त हो कर वृक्षमूल में दिव्य आसन पर बैठ मधुपान करते हैं। दोनों मधु मद से उन्मत्त हो जाते हैं। दोनों की आंखे झपकती हैं दोनों की वाणी और मन लड़खड़ाने लगते हैं तथा कामशर में बशीभूत हो कर रमण करने की इच्छा से एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कुंज में प्रवेश करते हैं। तब दोनों हाथी हाथिनि नाईं वहाँ रमण करते हैं सखियाँ भी मधपान से मत्त हो कर निद्रासे पीडिता हो चारों ओर सुन्दर कुंजों में सो जाती हैं। श्रीराधिका की

सर्वासां सन्निधिं गच्छेत् प्रियया प्रेरितो मुहुः ।
रमयित्वा च ताः सर्व्वाः करिणीर्गजराडिव ॥ ५८ ॥
प्रियया च तथा ताभिः क्रीडार्थञ्च सरो व्रजेत् ।
जलसेकैर्मिथस्तत्र क्रीडतः सगणौ ततः ॥ ५९ ॥
वासःस्रक्चन्दनैर्दिव्यैर्भूषणैरपि भूषितौ ।
तत्रैव सरसस्तीरे दिव्यरत्नमये गृहे ॥ ६० ॥
प्रागेव फलमूलानि कल्पितानि मया मुने ! ।
हरिस्तु प्रथमं भुंक्त्वा कान्तया परिवेष्टितः ॥ ६१ ॥
द्वित्राभिः सेवितो गच्छेच्छय्यां पुष्पविनिर्म्मिताम् ।
ताम्बूलैर्व्यजनैस्तत्र पादसंवाहनादिभिः ॥ ६२ ॥
सेव्यमानो हसंस्ताभिर्मोदते प्रेयसीं स्मरन् ।
राधिकापि हरौ सुप्ते सगणा मुदितान्तरा ॥ ६३ ॥
अपि तत्र गताप्राणा तदुच्छिष्टं भुनक्ति च ।
किञ्चिदेव ततो भुंक्त्वा व्रजेच्छय्यानिकेतनम् ॥ ६४ ॥

प्रेरणा से श्रीकृष्ण कायव्यूह रूप बन कर एक हीं समय सबके पास जाकर गजराज हस्तिनियों की तरह बार बार रमण करते हैं ॥ ५३ ॥ ५८ ॥ फिर राधिका सखिओं के साथ क्रीडा करने के लिये सरोवर को जाकर वहाँ जलक्रीड़ा करती हैं ॥ ५९ ॥ वस्त्र, माला, चन्दन, दिव्य भूषणों से भूषित हो कर वहीं सरोबर के तीर रत्नमय गृह में बिराजमान होते हैं ॥ ६० ॥ पहिले से मैं फल मूल बना कर रख देती हूँ। श्रीकृष्ण कान्ता के साथ वहाँ भोजन करते हैं। फिर दो तीन सखियों से सेवित हो कर पुष्पों की सेज पर जाते हैं। वहां पान व्यजन, पादसंबाहनादिक सेवा सखियां करती हैं। उन के साथ हँसते हुए तथा प्रिया जी का ध्यान करते करते परम आनन्द को प्राप्त होते हैं। राधिका भी श्रीहरि के सोने पर सहर्ष हृदय होकर सखियों

दृष्टं कान्तमुखाम्भोजं चकोरीव निशाकरम् ।
ताम्बूलं चर्व्वितं तस्य तत्रत्याभिर्निवेदितम् ॥ ६५ ॥
ताम्बूलान्यपि चाश्नाति विभजन्ती प्रियालिषु ।
कृष्णोऽपि तासां शुश्रूषुः स्वच्छन्दं भाषितं मिथः ॥ ६६ ॥
प्राप्तनिद्र इवाभाति विनिद्रोऽपि पटावृतः ।
ताश्च क्वेलीक्षणं कृत्वा कुतश्चिदनुमानतः ॥ ६७ ॥
विदंश्य रसनां दद्भिः पश्यन्त्योऽन्योन्यमाननम् ।
विलीना इव लज्जाब्धौ क्षणमूचुर्न किञ्चन ॥ ६८ ॥
क्षणादेव ततो वस्त्रं दूरीकृत्य तदङ्गतः ।
साधु निद्रां गतोऽसीति हासयन्त्यो हसन्ति च ॥ ६९ ॥
एवं तै र्विविधैर्हास्यै रममाणौ गणैः सह ।
अनुभूय क्षणं निद्रासुखञ्च मुनिसत्तम ! ॥ ७० ॥

साथ वहाँ हीं इकटक प्राण लगाती हुईं उन का अधरामृत पाकर शय्यागृह में जाती हैं ॥ ६१-६४ ॥ राधिका जी अपने प्रियतम के मुख कमल को देखने को चकोरी चन्द्रमा की तरह उत्सुका रहती हैं । वहाँ श्रीकृष्ण ताम्बूल चर्वण करते हैं । श्रीराधा भी सखियों को कृष्ण चर्वित ताम्बूल बांट कर स्वयं उस का आस्वादन करती हैं । श्रीकृष्ण सखियों की सेवा से स्वच्छन्द हो कर राधिका से बात करते हैं फिर वस्त्र की आड में जागते हुए भी सोने का बहाना देखाते हैं । वे सखियाँ किसी अनुमान से क्षण काल खेला करती हुईं फिर चूप हो कर दांतों से जीभ दबाती हुईं एक दूसरे का मुख देखने लगती हैं मानों लज्जा के सागर में डूब जाती हैं ॥ ६५-५८ ॥ क्षण भर में वे सब श्रीकृष्ण के अंग का वस्त्र हटा दे कर कहने लगती हैं कि "वाह भले सोते हो" । इस प्रकार कह कर हँसाती हैं और हंसती हैं ॥ ६९ ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! इस प्रकार सखियों की बिविध

उपविश्यासने दिव्ये सगणौ विस्तृते मुदा।
पणीकृत्य मिथो हारचुम्बाश्लेषपरिच्छदान् ॥ ७१ ॥
अक्षै र्विक्रीडतः प्रेम्णा नर्म्मालापपुरःसरम्।
पराजितोऽपि प्रियया जितोऽहमिति वै ब्रुवन् ॥ ७२ ॥
हारादिग्रहणे तस्याः प्रवृत्तस्ताडयते तया।
तथैवं ताडितः कृष्णः करेणास्यसरोरुहे ॥ ७३ ॥
विषण्णमानसो भूत्वा गन्तुं प्रकुरुते मतिम्।
जितोऽस्मि चेत् त्वया देवि गृह्यतां यत् पणीकृतम् ॥७४॥
चुम्बनादि मया दत्तमित्युक्ता सा तथा चरेत्।
कौटिल्यं तद्भ्रुवो द्रष्टुं श्रोतुं तद्भर्त्सनं वचः ॥ ७५ ॥
ततः सारीशुकानाञ्च श्रुत्वा वागाहवं मिथः।
निर्गच्छतस्ततः स्थानाद्गन्तुकामौ गृहं प्रति ॥ ७६ ॥

भांति की हँसी में प्रिया प्रियतम रमण करते हुए क्षण काल निद्रा सुख का अनुभव करते हैं ॥ ७० ॥ दोनों हर्षता के साथ दिव्य आसन पर सखियों के सह बैठ कर हार, वस्त्र, चुम्बन, आलिङ्गनादि कों का पण रख नर्म्म परिहास करते हुए पांसे खेलते हैं। प्रिया जी से श्रीकृष्ण हार कर भी "मैं जीता हूँ" एसा कहते हैं ॥ ७१। ७२ ॥ जब श्रीकृष्ण उन के हारादि लेने को प्रवृत्त होते हैं तब प्रिया जी के कर कमल से ताडित हो कर खिझ के चले जाने का मन करते हैं तब कहते हैं "राधिके! यदि तुमने मुझे जीता है तो जो पण हो सो ले लो" "मैं ने चुम्बनादि दिये है" एसे कह के उन की भ्रुवों की कुटिलता देखने को तथा तिरस्कार बचन सुनने को तथा आचरण करते हैं ॥ ७३-७५ ॥ अनन्तर शुक, सारीयों का बचन कलह सुन, घर जाने की इच्छा करते हुए वहाँ से निकलते हैं। श्रीकृष्ण कान्ता को कह के गायों की ओर चले जाते हैं तथा

कृष्णः कान्तामनुज्ञाप्य गवामभिमुखं व्रजेत् ।
सा तु सूर्य्यगृहं गच्छेत् सखीमण्डलसंयुता ॥ ७७ ॥
कियद्दूरं ततो गत्वा परावृत्य हरिं पुनः ।
बिप्रवेषं समास्थाय याति सूर्य्यगृहं प्रति ॥ ७८ ॥
सूर्य्यं प्रपूजयेत् तत्र प्रार्थितस्तत्सखीजनैः ।
तदैव कल्पितैर्वेदः परिहासविगर्हितैः ॥ ७९ ॥
ततस्ता ज्ञापितं कान्तं परिज्ञाय विचक्षणाः ।
आनन्दसागरे मग्ना न विदुः स्वं नवापरम् ॥ ८० ॥
विहारैर्विविधैरेवं सार्द्धयामद्वयं मुने ! ।
नीत्वा गृहं व्रजेयुस्ताः स च कृष्णो गवां व्रजेत् ॥ ८१ ॥
सङ्गम्य स्वसखीन् कृष्णो गृहीत्वा गाः समन्ततः ।
आगच्छति व्रज हर्षान्नादयन् मुरलीं मुने ! ॥ ८२ ॥

राधिका जी सखियों से मिल कर सूर्य्य मन्दिर को जाती हैं ॥ ७६-७७ ॥ कुछ दूर जाकर श्रीराधिका कृष्ण को लौटा लाती हैं। तब तक श्रीकृष्ण ब्राह्मण का बेष धर के सूर्य्य मन्दिर में पहुंच जाते हैं और सखियों की प्रार्थना से वहाँ सूर्य्य को पूजते हैं। तब ब्राह्मण रूपी श्रीकृष्ण परिहास पूर्ण कल्पित बेद का पाठ करते हैं। विचक्षण सखियाँ जब उस ब्राह्मण को अपना प्यारा कृष्ण ही जान लेती हैं तब आनन्द सागर में मग्न हो कर अपने पराये को भूल जाती हैं ॥ ८० ॥ इस प्रकार बिबिध बिहारों से अढ़ाइ पहर बीता कर वे सब अपने घर चली आती हैं श्रीकृष्ण भी गायों की ओर चले जाते हैं ॥ ८१ ॥

हे मुनि ! श्रीकृष्ण अपने सखायों के साथ मिल कर चारों ओर से गायों को समेट के आनन्द के साथ बंशी बजाते हुए ब्रज को जाते हैं ॥ ८२ ॥ तब नन्दादिक श्री कृष्ण के बंशी नाद सुन कर तथा गोधूलि समूह से आकाश को व्याप्त देख सकल

ततो नन्दादयः सर्वे श्रुत्वा वेणुरवं हरेः ।
गोधूलिपटलव्याप्तं दृष्ट्वा चापि नभस्तलम् ॥ ८३ ॥
विसृज्य सर्वकर्माणि स्त्रियो बालादयोऽपि च ।
कृष्णस्याभिमुखं यान्ति तद्दर्शनसमुत्सुकाः ॥ ८४ ॥
राजमार्गे व्रजद्वारि यत्र सर्वे व्रजौकसः ।
कृष्णोऽपि तान् समागम्य यथावदनुपूर्व्वशः ॥ ८५ ॥
दर्शनस्पर्शनैर्वाचा स्मितपूर्वावलोकनैः ।
गोपवृद्धान् नमस्कारैः कायिकैर्वाचिकैरपि ॥ ८६ ॥
अष्टाङ्गपातैः पितरौ रोहिणीमपि नारद ! ।
नेत्रान्तसुचितेनैव विनयेन प्रियां तथा ॥ ८७ ॥
एवं तैस्तद् यथायोग्यं व्रजौकोभिः प्रपूजितः ।
गवालये तथा गाश्च संप्रवेश्य समन्ततः ॥ ८८ ॥
पितृभ्यामर्थितो याति भ्रात्रा सह निजालयम् ।
स्नात्वा पीत्वा तत्र किञ्चिद्भुक्त्वा मात्रानुमोदितः ॥८९॥

कर्म्म छोड़ कर श्रीकृष्ण के निकट भागते हैं । आबाल बृद्ध-बनिता भी श्रीकृष्ण को देखने के लिये उत्कण्ठित होकर उनकी ओर दौड़ते हैं। राजमार्ग में ब्रज के द्वार पर उपस्थित ब्रज-बासियों के पास पहुँच कर सब को पूर्व क्रम से दर्शन, स्पर्शन, बचन, मन्दहास्य युक्त दृष्टि प्रभृति के द्वारा यथायोग्य सम्भाषण करते हैं। बृद्ध गोपों को कायिक, बाचिक नमस्कार के द्वारा तथा नन्द, यशोदा और रोहिणी को साष्टांग दण्डबत से, नेत्राञ्चल की सूचना के द्वारा श्री प्रिया को यथा योग्य प्रसन्न करके तथा उन सबसे यथा योग्य सन्मानित होकर चारों ओर से गायों को गोष्ठ में प्रबेश कराते हैं ॥ ८३ ॥ ८८ ॥ अनन्तर माता पिता के कहने पर बलदेब जी के साथ अपने घर जाते हैं और वहाँ स्नानादि कर कुछ भोजन पान करते हैं ॥ ८९

गवालयं पुनर्याति दोग्धुकामो गवां पयः ।
ताश्च दुग्ध्वा दोहयित्वा पाययित्वा च काश्चन ॥९०॥
पित्रा साद्धं गृहं याति तत्र भावशतानुगः ।
तत्र पित्रा पितृव्यैश्च तत्पुत्रैश्च बलेन च ॥ ९१ ॥
भुनक्ति विविधान्नानि चर्व्व्यचोष्यादिकानि च ।
तन्मतिः प्रार्थनात् पूर्व्वं राधिका च तदैव च ॥९२॥
प्रस्थापयेत् सखीद्वारा पक्वान्नानि तदालयम् ।
श्लाघयंश्च हरिस्तानि भुंक्त्वा पित्रादिभिः सह ॥ ९३ ॥
सभागृहं व्रजेत् तैश्च जुष्टं वन्दिजनादिभिः ।
पक्वानानि गृहीत्वायाः सख्यस्तत्र पुरागताः ॥ ९४ ॥
बहूनि च पुनस्तानि प्रदत्तानि यशोदया ।
सख्यस्तत्र तया दत्तं कृष्णोच्छिष्टं नयन्ति च ॥ ९५ ॥
सर्वं ताभिः समानीय राधिकायै निवेद्यते ।
सापि भुंक्त्वा सखीवर्गयुता तदनुपूर्वशः ॥ ९६ ॥

फिर गोदोहन की इच्छा से गोष्ठ में जाकर सब को दुहँ के दुहाके, बछड़े को पिलाके पित्ताके साथ घर आते हैं। सैंकड़ों भावों के अनुगमन करने वाले श्री कृष्ण वहाँ पिता, चचा, चचेरे भाई और बलदेव जी के साथ विविध प्रकार के चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय, अन्न भोजन करते हैं। उनके मन जान कर पहले से राधिकाजी विविध प्रकार के पकवान सखियों के द्वारा भेज दियी थीं। श्रीकृष्ण उन भोजनों की प्रशंसा करते हुए पिताजी के साथ भोजन करने लगते हैं ॥ ९३ ॥ अनन्तर सबके साथ बन्दिजनों से युक्त सभा स्थल में जाते हैं। यशोदाजी ने पकवान लाई हुई सखियों को बहुत कुछ दिया। सखियों ने यशोदा का दिया हुआ द्रव्य तथा श्रीकृष्ण का अधरामृत ले कर राधिका के आगे धरा। राधिका ने यथा

सखीभिर्मण्डिता तिष्ठेदभिसर्त्तुं समुद्यता ।
प्रस्थाप्यते मया काचिदित एव ततः सखी ॥ ९७ ॥
तयाभिसारिता साथ यमुनायाः समीपतः ।
कल्पवृक्षनिकुञ्जेऽस्मिन् दिव्यरत्नमये गृहे ॥ ९८ ॥
सितकृष्णनिशायोग्यवेषा याति सखीवृता ।
कृष्णोऽपि विविधं तत्र दृष्ट्वा कौतूहलं ततः ॥ ९९ ॥
कात्यायन्या मनोज्ञानि श्रुत्वा सङ्गीतकान्यपि ।
धनधान्यादिभि स्ताश्च प्रीणयित्वा विधानतः ॥ १०० ॥
जनैराराधितो मात्रा याति सख्या निकेतनम् ।
मातरि प्रस्थितायाञ्च भोजयित्वा ततो गृहम् ॥ १०१ ॥
सङ्केतकं कान्तयात्र समागच्छेदलक्षितः ।
मिलित्वा तावुभावत्र क्रीडतो बनराजिषु ॥ १०२ ॥

पूर्वक सखियों के साथ अधरामृत खाया ॥९६॥ अब राधिकाजी सखियों के साथ घर से बाहर अभिसार के लिये उद्यता हुईं । इस लिये उधर किसी सखी को मैं ने भेजा ॥ ९७ ॥ श्री राधिका यमुना के समीप उसके साथ निकल कर वहाँ से कल्पवृक्षों के युक्त निकुञ्ज के रत्नमय गृह में गईं ॥ ९८ ॥ वह सखियों से वेष्टित हो कर शुक्ल कृष्ण रात्रि के योग्य वेष धारण किये हुए जाती हैं । इधर श्रीकृष्ण ने विविध कौतूहल देख कर तथा कात्यायनी देवी के मनोहर गान सुन उन्हें धन धान्यादि से प्रसन्न किया ॥ १०० ॥ जनों से सेवित होकर घर पर आये और माता के भेजे हुए को भोजन करने लगे ॥ १०१ ॥ अब अलक्षित भाव से वहाँ निकल कर राधिका से मिलने लगे तथा बनों में दोनों का विविध प्रकार क्रीड़ा हुईं । रास, नृत्य, हास्यादि के साथ बिबिध प्रकार विहार से अढ़ाई पहर रात्रि बिता कर पक्षियों से भी अलक्षित एकान्त कुञ्ज में प्रबेश कर

विहारैर्विविधै रासलास्यहासपुरः सरैः ।
सार्द्धयामद्वयं नीत्वा रात्रेरेवं विहारतः ॥ १०३ ॥
सुषुप्सुः विशतः कुञ्जं पक्षिणीभिरलक्षितौ ।
एकान्ते कुसुमैः क्लृप्ते केलितल्पे मनोहरे ॥ १०४ ॥
सुप्तावातिष्ठतस्तत्र सेव्यमानौ निजालिभिः ।
इति ते सर्वमाख्यातं नैत्यिकं चरितं हरेः ॥ १०५ ॥
पापिनोऽपि विमुच्यन्ते श्रवणादस्य नारद ! ।

नारद उवाच—धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि त्वया देवि ! न संशयः ॥
हरेर्दैवनन्दिनी लीला यतो मेऽद्य प्रकाशिता ।

सूत उवाच—इत्युक्त्वा तां परिक्रम्य तया चापि प्रपूजितः ॥१०७॥
अन्तर्द्धानं गतो ब्रह्मन् नारदो मुनिसत्तमः ।
यथाप्येतच्चानुपूर्व्व्यात् सर्वमेव प्रकीर्त्तितम् ॥ १०८ ॥
जपेन्नित्यं प्रयत्नेन मन्त्रयुग्ममनुत्तमम् ।
कृष्णवक्त्रादिदं लब्धं पुरा रुद्रेण यत्नतः ॥ १०९ ॥
तेनोक्तं नारदायापि नारदेन ममोदितम् ।
संस्कारांश्च विधायैव मयाप्येतत् तवोदितम् ॥ ११० ॥

पुष्पों से मण्डित सेज पर शयन करते हैं तथा सखियों से सेवित रहते हैं। इस प्रकार मैंने तुम से श्रीकृष्ण का नैत्यिक चरित्र कहा ॥ १०२ । १०५ ॥ हे नारद ! इसके सुनने से पापी लोग भी मुक्त हो जाते हैं। नारद जी बोले हे देवि ! मैं धन्य हूँ। तुमने मुझ पर कृपा की, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १०६ ॥

हरि की दैवनन्दिनी लीला जो तुमने मेरे आगे प्रकाशित की। सूत जी बोले—इतना कह कर मुनि ने उस वृन्दादेवी की प्रदक्षिणा की। उनसे पूजित होकर मुनिश्रेष्ठ नारद जी अन्तर्द्धान हो गये। मैंने भी आरम्भ से इसका समस्त वर्णन किया ॥ १०७ । १०८ ॥ नित्य यत्न से सर्वोत्तम युगल मन्त्र का जप करे। पहिले बहु चेष्टा से रुद्र ने इसे श्रीकृष्ण से पाया था, उन्होंने नारद जी से कहा, नारद जी ने मुझे कहा, तुम भी इस

त्वयाप्येतद्गोपनीयं रहस्यं परमाद्भुतम् ।
शौनक उवाच—कृतकृत्योऽभवं साक्षात् त्वत्प्रसादादह गुरो ! ॥
रहस्यानां रहस्यं यत् त्वया मह्यं प्रकाशितम् ।
सूत उवाच—धर्म्मानेतानुपातिष्ठन् जल्पन् मन्त्रमहर्निशम् ॥११२॥
अचिरादेव तद्दास्यमवाप्स्यसि न संशयः ।
मयापि गम्यते ब्रह्मन् नित्यमायतनं विभोः ॥ ११३ ॥
इदं चरित्रं परमं पवित्रं प्रोक्तं महेशेन महानुभावम् ।
शृण्वन्ति ये भक्तियुता मनुष्यास्ते यान्ति नित्यं पदमच्युतस्य११४
धन्यं यशस्यमायुष्यमारोग्याभीष्टसिद्धिदम् ।
स्वर्गापवर्गसम्पत्तिकारणं पापनाशनम् ॥ ११५ ॥
भक्त्या पठन्ति ये नित्यं मानवा विष्णुतत्पराः ।
न तेषां पुनरावृत्ति र्विष्णुलोकात् कथञ्चन ॥ ११६ ॥
॥इति पद्मपुराणे पातालखण्डे वृन्दावनमाहात्म्ये चतुर्दशोऽध्यायः॥

परम अद्भुत रहस्य को गुप्त रखना। शौनकादि मुनिगण बोले-हे गुरो! तुम्हारे प्रसाद से हम सब कृत्यकृत्य हुए ॥ १०२। ११५ ॥ रहस्यों का रहस्य जो आपने हमसे कहा। सूत जी बोले--इन धर्मों का अनुष्ठान करते हुए रात्रि दिन युगल मन्त्र का रटन करने से शीघ्र ही श्रीकृष्ण का दास्य मिलता है, इसमें कोई संशय नहीं है। हे ब्रह्मन्! मैं भी श्रीकृष्ण के नित्य धाम को जाता हूँ ॥ ११३ ॥ मैं गुरुओं के गुरु गोपीश्वर महादेवजी के पास यमुना के तीर जाता हूँ ॥ ११४ ॥ यह परम पवित्र, महानुभव चरित्र को महादेवजी ने कहा है। जो भक्तियुक्त मनुष्यें इसे सुनते हैं, वे अच्युत के अविनाशी पद को प्राप्त होते हैं ॥ ११५ ॥ यह चरित्र धन्य है, जो यश, आयु, आरोग्य, अभीष्ट, सिद्धि को देता है तथा स्वर्ग, अपवर्ग सम्पत्ति का कारण है और पाप नाशक भी है ॥ ११६ ॥ विष्णु परायण जो मनुष्यें इसे भक्ति के साथ नित्य पाठ करते हैं उनका विष्णुलोक से किसी प्रकार पुनरावृत्ति नहीं है ॥

॥ महाप्रभोरष्टकालीयलीला ॥

प्रगे श्रीवासस्य द्विजकुलवरै र्निष्कुटवरे
श्रुतिध्वानप्रख्यैः सपदि गतनिद्रं पुलकितम् ।
हरेः पार्श्वे राधास्थितिमनुभवन्तं नयनजै
र्जलैः संसिक्ताङ्गं वरकनकगौरं भज मनः ॥ १ ॥
प्रभाते प्रक्षाल्य स्ववदनविधुं केशवकथां
गृहालिन्दे प्रेमाकुलितहृदयं यः प्रियजनैः ।
ब्रुवन्नास्ते राधारसकलनफुल्लो वरतनु
र्भज त्वं तं गौरं निरवधि मनः प्रेमवलितम् ॥ २ ॥
हरिवनगतिलीलां व्याकुलीभूतगोष्ठां
स्मृतिविषयगतां यः कारयामास साक्षात् ।
तदनुकरणकारी भक्तबृन्दस्य मध्ये
तमहमनुभजामि श्रीलगौरांगचन्द्रम् ॥ ३ ॥

रे मन ! शेष रात्रि के समय श्रीवास पण्डितके कुसुम कानन में पक्षियों के मधुर शब्द से गतनिद्र व पुलकायमान तथा श्रीहरि के पास श्री राधिका की स्थिति का अनुभव करते हुए नयन धाराओं से धौत शरीर, सुन्दर सुवर्ण के तुल्य गौरांग का भजन कर ॥ १ ॥

जो प्रभात काल में मुख प्रक्षालन करके गृह के आंगन में प्रेम व्याकुलता के साथ प्रियजनों से कृष्णकथा कहते हैं तथा राधाभाव के आस्वादन से जिनका श्रीअंग फुल्लायमान है उन श्रीगौरचंद्र के लिये निरन्तर प्रेम के साथ तू भजन कर ॥२॥

जो श्रीहरि के बनगमन व गोष्ठजनों की व्याकुलता को साक्षात् भक्तों के मध्य में अनुकरण करते हुए स्मरणों को मूर्त रूप प्रदान करते हैं उन श्रीगौरचन्द्र का मैं भजन करता हूँ ॥३॥

सहालि-श्रीराधा-सहित-हरिलीलां वहुविधां
स्मरन् मध्यान्हीयां पुलकिततनु गद्गदवचाः ।
ब्रुवन् व्यक्तं ताञ्च स्वजनगणमध्येऽनुकुरुते
शचीसूनुर्यस्तं भज मम मनस्त्वं वत सदा ॥ ४ ॥
पराबृत्तिं गोष्ठे ब्रजनृपतिसूनोर्बिपिनतो
महानन्दाम्भोधेः सपदि जनयित्रीं स्वहृदये ।
स्मरन् श्रीगौराङ्गो नटति वलते निःश्वसिति च
क्षणं मुह्यन् सर्वान् विवशयति यस्तं भज मनः ॥ ५ ॥
सायन्तनीं कृष्णमनोज्ञलीलां स्नानाशनाद्यां हि मुहुर्विचिन्त्य ।
स्वभक्तमध्येऽनुकरोति नित्यं तां यो मनस्त्वं भज गौरचन्द्रम् ॥६॥
समुत्कण्ठासन्नाकलितहरिवार्त्तां वत यथा-
भिसृत्यासौ राधा हरिमपि निकुञ्जे गतवती ।

जो सखियों के साथ श्रीराधा कृष्ण दोनों की नाना प्रकार की मध्याह्नकालीन लीलाओं का स्मरण कर पुलकायमान तथा गद्गद हो जाते हैं फिर उसी लीला को दुहराते हुए वर्णन व अनुकरण करते हैं उन श्री शचीनन्दन गौर हरि के लिये हे मन! तू सदा भजन कर ॥ ४ ॥

जो श्रीगौरांग बन से नन्दनन्दन के ब्रज में महान् आनंद सागर उत्पादक आगमन का अपने हृदय में स्मरण कर नृत्य करते करते दीर्घ निश्वास त्याग करते हैं तथा मोहित होकर सब को विवश कर देते हैं रे मन ! उन श्री गौरांग के लिये तू भजन कर ॥ ५ ॥

जो सायंकालीन श्रीकृष्ण के स्नान, भोजनादिक मनोहर लीलाओं का बार बार चिन्तवन करते हुए सर्वदा भक्तों के समूह में अनुकरण करते हैं उन श्रीगौरचन्द्र का तू भजन कर ॥६॥
जिस प्रकार श्रीहरि के संकेत सुन श्रीराधिका व्याकुल

तथात्मानं मत्वा कटिनिहितपाणिर्विशति च
स्खलन् गच्छन् गौरो नटति धृतकम्पाश्रुपुलकः ॥ ७ ॥
श्रीश्रीवासगृहे मुदा परिवृतो भक्तैः स्वनामावलीं
गायद्भिर्गलदश्रुकम्पपुलको गौरो नटित्वा प्रभुः ।
पुष्पारामगते सुरत्नशयने ज्योत्स्नायुतायां निशि
विश्रान्तः स शचीसुतः कृतफलाहारो निसेव्यो मम ॥ ८ ॥

हृदया हो सखियों के साथ निकुञ्ज में अभिसार करती हैं, ठीक उसी भाव से भावित हृदय जो गौरहरि पुलकाश्रुकम्प युक्त होकर रसावेश में गिरते हुए कमर पर हाथ धरकर श्रीवास पण्डित के आंगन में प्रदोष के समय उपस्थित होते हैं, उन श्रीगौरांगचन्द्र का तू भजन कर ॥ ७ ॥

श्रीवास के भवन में आनन्द से भक्तों के द्वारा वेष्टित होकर जो निज नाम समूह कीर्त्तन करते हुए अश्रु, कम्प, पुलक के साथ नृत्य करते हैं तथा रात्रि में पुष्कानन की सुरत्न शय्या में फलादिक भोजन कर शयन करते हैं वह गौर हरि शचीनन्दन मेरे सेव्य हैं ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमद्रूपगोस्वामिकृतमहाप्रभोरष्टकालीयलीला ॥

अनुवादक—कृष्णदास ।

मुद्रक—लोक साहित्य प्रेस, मथुरा ।

यह पुस्तक तथा प्रकाशित अन्य पुस्तकें मिलने का पता—

१—श्रीरामनिवास खेतान की दूकान, सवामनशालग्राम जी मन्दिर के नीचे (लोई बाजार) वृन्दावन।
अनुपस्थिति में— इस मंदिर के भीतर।

२—बाबा महन्त उद्धारणदास जी, कुसुमसरोवर, गवालियर—मन्दिर, राधाकुण्ड (मथुरा)

३-मोतीरामगुप्ता, भगवानभजनआश्रम, बल्लीगंज, वृन्दावन।

गीता प्रेस की पुस्तकें यहाँ मिलती हैं-

४—राधेश्यामगुप्ता, बुकसेलर, पुरानासहर, वृन्दावन।

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम्।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८
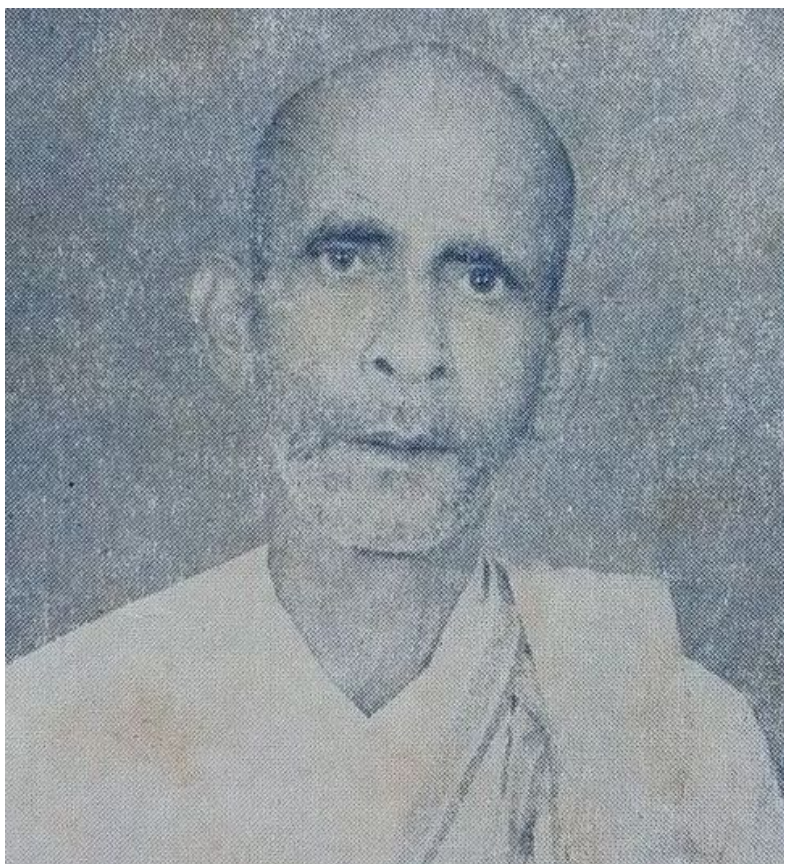
इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्